पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्रा

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२०, अंकः-०३, सितम्बर, सन्-२०१७, सं०-२०७४ वि०, दयानंदाब्द १६३, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

दयानन्द और हिन्दी

हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण में स्वामी दयानन्द का योगदान अनूठा है !

उनकी भाषण कला से हिन्दी में अद्‌भुत निखार आया !

-विष्णु प्रभाकर-

स्वामी जी ने परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप में हिन्दी साहित्य के निर्माण में क्या योगदान किया और उसका हिन्दी गद्य पर क्या प्रभाव पड़ा यह जानना हमारा मुख्य उद्देश्य है। वह महत्त्वपूर्ण भी है क्योंकि इसी काल में गद्य का विकास हुआ। किसी भी भाषा में प्रारम्भिक साहित्य प्रायः पद्य में ही मिलता है। लेकिन बाद में अनेक कारणों से जिनमें व्यावहारिक आवश्यकता और राष्ट्रीयता का विकास मुख्य है, गद्य का जन्म होता है। उन्नीसवीं सदी में आजादी की ललक और धार्मिक उथल-पुथल मच उठने के कारण गद्य की आवश्यकता शिद्दत से अनुभव की जाने लगी। वाद-विवादमय प्रचार के लिए पद्य उपयुक्त साधन नहीं है। उसके लिए सरल, सहज, सशक्त और लोक प्रचलित गद्य की आवश्यकता होती है। इसी कारण संस्कृतज्ञ और गुजराती होते हुए भी स्वामी जी की भाषा में शक्ति भी है और सहजता भी, जैसे :

'जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य ही नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश करे, किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसे वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।'

परोक्ष रूप में स्वामीजी ने हिन्दी साहित्य की सेवा करने के प्रयत्न में जो साधन अपनाये उनमें सबसे प्रमुख है भाषण या व्याख्यान। जैसा कि हम कह आये हैं हिन्दी को अपनाने के बाद उनका सबसे पहला हिन्दी भाषण मई, १८७४ में काशी में हुआ था। हिन्दी भाषा में व्याख्यान देने का यह परिणाम तो अवश्य हुआ कि सर्वसाधारण अधिक संख्या में व्याख्यान सुनने आने लगे किन्तु पण्डितों की उपस्थिति कम हो गयी।

स्वामी जी यही तो चाहते थे कि उनकी बात सर्वसाधारण तक पहुँचे। यद्यपि अगले दो वर्ष तक वे पूरी तरह शुद्ध हिन्दी न तो लिख ही पाये न बोल ही पाये परन्तु उनकी भाषण शैली इतनी प्रभावशाली थी कि वे जनता के अन्तरतम तक अपनी बात पहुँचाने में सफल हो जाते थे। उनकी यह शक्ति निरन्तर विकसित होती रही और शीघ्र ही वे धारा-प्रवाह शुद्ध और परिमार्जित हिन्दी में बोलने और लिखने लगे। उनकी भाषण शक्ति के विषय में एक बन्धु विष्णुदत्त ने देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को लिखा था :

'स्वामी जी उत्कृष्ट वक्ता थे। उनका उच्च स्वर गम्भीर और मधुर था। उनकी बोलने की रीति तेजपूर्ण और उनका आक्रमण तीव्र होता था, उनकी वाणी एकदम हृदय में प्रवेश कर जाती थी इसलिए वह विरुद्ध पक्ष के लोगों को असह्य हो जाती थी और वे बीच में से ही उठकर चले जाते थे।'

स्वामी श्रद्धानन्द तो उनकी भाषण कला पर मुग्ध थे। इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी भाषण कला ने हिन्दी को परिमार्जित ही नहीं किया, उसके सही अर्थ को अभिव्यक्त करने की अदम्य शक्ति भी दी। श्रद्धानन्द जी ने पं.लेखराम द्वारा लिखित स्वामी जी की जीवनी की भूमिका में कहा है :

'मैंने केशवचन्द्र सेन, लालमोहन घोष, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी और ऐनी बेसेंट आदि व्याख्याताओं के भाषण सुने हैं पर मैं सच्चे दिल से कहता हूँ कि जो असर मुझ पर उस रोज के व्याख्यान ने किया और जो फसाहत कि मुझे उस रोज के सादे शब्दों में मालूम हुई वह अब तक तो दिखायी नहीं दी।... महाराज ने सत्य के बल पर बोलना प्रारम्भ किया। पादरी स्कॉट को छोड़कर पहले दिन के सब अंग्रेज सज्जन विद्यमान थे। कोई आदमी नहीं हिलता

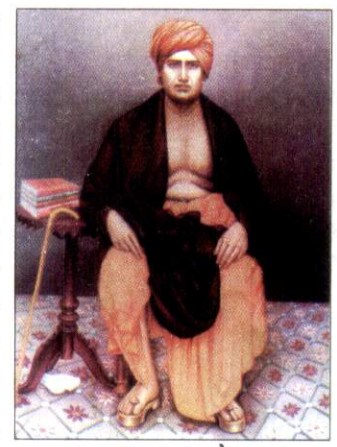

था। सब चुपचाप एकाग्र होकर व्याख्यान सुन रहे थे।....'

ऋषि ने कहा, **'लोग कहते हैं कि सत्य को प्रगट न करो। कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे ! चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।...आत्मा का न तो कोई हथियार छेदन कर सकता है और न उसे आग जला सकती है।'** यह कहकर वे गरजती हुई आवाज में बोले, **'यह शरीर तो अनित्य है। इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे...लेकिन वह सूरमा वीर पुरुष दिखाओ जो यह दावा करता है कि वह मेरी आत्मा का नाश कर सकता है। जब तक ऐसा वीर संसार में दिखायी नहीं देता मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं हूँ कि मैं सत्य का दबाऊँ या नहीं।'**

यह वाणी निष्कपट निडर व्यक्ति के हृदय से ही निकल सकती है। और उस समय अज्ञान, अन्धविश्वास और मूढ़ता के सुदृढ़ दुर्ग को धराशायी करने के लिए इसी की आवश्यकता थी। वे सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों पर ऐसी ही सरल भाषा में बोलते थे। वे अपने भाषणों को रोचक और हास्य-विनोद से पूर्ण बनाना भी खूब जानते थे। बीच बीच में दृष्टान्त सुनाते रहते थे। और हँसाते रहते थे, पर उनकी विनोदप्रियता प्रायः व्यंग्य प्रधान और शिक्षाप्रद होती थी :

"एक राजा बैंगन खाकर सभा में आये, उस दिन उन्हें बैंगन बहुत स्वादिष्ट लगे थे। सभा में आकर उन्होंने कहा कि बैंगन बड़े स्वादिष्ट होते हैं तो दरबारी कहने लगे कि महाराज बैंगन तो शाकों का राजा है। देखिये इसका वर्ण श्रीकृष्ण के वर्ण के समान है और सिर पर मुकुट है। राजा ने बैंगन अधिक खा लिये थे। रात्रि में उन्होंने विकार किया। अतः अगले दिन सभा में आकर राजा ने बैंगन की बुराई की तो चाटुकार दरबारी भाट कहने लगे कि महाराज इन्हीं अवगुणों के कारण

तो इसका वर्ण काला हो गया है और इसे यह दंड मिला है कि शाखा में नीचे लटकता रहे।"

इस कथा का बाद में पं.राधेश्याम कथावाचक ने अपने एक नाटक में प्रयोग किया। भाषणों की तरह सन् १८७४ के बाद वे शास्त्रार्थ भी हिन्दी में करने लगे थे। उनमें भी उन्हें प्रभावशाली और तर्कपूर्ण भाषा का प्रयोग करना पड़ता था। गूढ़-से-गूढ़ शास्त्रीय भाव को सहज भाषा में रखना स्वयं में सहज नहीं है पर स्वामी

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

अभय हो !

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं
ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रम् भवन्तु।

(अथर्व. : 19/15/6)

मित्र से अभय हो,
अमित्र से अभय हो,
ज्ञात से अभय हो,
साक्षात् से अभय हो,
रात्रि में अभय हो,
दिवस में अभय हो,
यह दिक्‌दिगन्त सारा
हो मित्रवत् हमारा !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

पुरस्कार और दण्ड

यदि देश में कोई सर्वोपरि सम्मान है, तो उन बहादुर साध्वी- बहनों को दीजिए जिन्होंने नैतिक बल और साहस की बेजोड़ मिसाल पेश करते हुए अलाउद्दीन खिलजी और रावण जैसे दम्भी और मायावी अतुल बल सम्पन्न दुराचारियों के विरुद्ध खड़े होने का साहस किया। अघम नराधम साधुवेश और गुरु की महिमा को तार तार करने वाले नरपिशाचों के आतंक-धमकी और अत्याचारों के समक्ष घुटने नहीं टेके और प्राणों की बाजी लगा दी और उनके पापों के दुर्ग को धराशायी कर दिया। रामपाल, आसाराम और राम रहीम के कुत्सित कलंकपूर्ण कारनामों को उजागर करने वाली जानकी और पद्मिनी की परम्परा में पूजनीया आदरणीया शाहजहाँपुर (उ.प्र.) और पंजाब की ये वीर बालाएँ प्रणम्य हैं; ये ही भारत रत्न और विश्व रत्न सम्मान की सच्ची हकदार हैं। इससे भी बढ़कर जस्टिस जगमोहनलाल सिनहा की श्रेणी में, एक नाम और जुड़ गया है- वह है जस्टिस जगदीप सिंह। सत्य और न्याय को समर्पित इस न्यायाधीश को पद्मविभूषण, भारतरत्न, विश्वरत्न- कोई भी सम्मान दिया जाय, कम है।

और सजा देनी है तो कठोर से कठोरतम दण्ड- जो भी देश में उपलब्ध हो, वह उन माता-पिताओं को दीजिए, जिन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों को ऐसे गुरुओं के डेरे या आश्रमों में भेजा और जब वे किसी तरह उनके चंगुल से निकल कर वापस आ गईं तो पुनः उन्हीं के पास उनसे माफी मांगते हुए वापस भेजा। अगर माता-पिता सही अर्थों में अपना रोल निभाते तो हिंसा-उपद्रव के ये दुर्दिन देखने न पड़ते। इन आश्रमों और डेरों में अपनी सन्तानों- बेटियों-बेटों को पहुँचाने वाले इन पिताओं-माताओं की सूची बनायें और कोई कठोर कानून बनाकर इन्हें जेलखाने में डाल दीजिए जहाँ इनके धर्मगुरुओं- आसाराम, रामपाल, राम रहीम को स्थान मिला है। अधम धर्मगुरुओं से कहीं अधिक दोषी तो यही माता-पिता हैं, जिन्होंने अपनी सन्तानों को इन गुरुओं के पास भेजकर इनके साथ घोर अन्याय किया है और इनका जीवन बर्बाद कर दिया है। भारत के धर्म, आध्यात्म ओर श्रद्धा विश्वास पर कालिख पोती है। नीतिशास्त्र कहता है-

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः,
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा।। (चाण्क्य-नीति)

लानत है, ऐसे नेताओं पर जो इन गुरुओं का चरण चुम्बन करते हैं। हमारे देश में आज भी ऐसे राजनेताओं की कमी नहीं है; जिनकी कोर्ट का चाबुक पड़ने पर दौड़ने की आदत है। जो प्रतीक्षा करते हैं कि कब कोई फटकार लगाये और वे कुछ काम करें। आज कोर्ट को ऐसी सख्त टिप्पणी करने को विवश होना पड़ा कि उन्होंने सियासती फायदे के लिए जानते हुए भी लाखों गुण्डों को पंचकूला तक आने के लिए रास्ता दे दिया। यदि राम रहीम के साथ उनकी तथाकथित बेटी (जो किसी दूसरे की विवाहिता पत्नी है और उसे पति के साथ जाने ही नहीं दिया गया था) कोर्ट कैम्पस तक पहुँचने में कामयाब होती है, तो यह एक दुराचारी के सामने सरेंडर होना नहीं, तो और क्या है?

अहोभाग्य कि उन दिनों (सन् २००२) श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधान मंत्री थे; जिन्होंने साध्वी बहनों के गुमनाम पत्रों को संज्ञान में लेकर सी.बी.आई. को सौंपा। उसी परम्परा में आज सूर्य के प्रचण्ड आतप की तरह तप रहे प्रधानमंत्री मोदी जी का वक्तव्य सुनकर सीना चौड़ा हो जाता है कि कानून के सामने सभी को झुकना होगा, हिंसा बर्ताश्त नहीं होगी।

ध्यान रहे, हरियाणा या किसी भी प्रदेश में भाजपा की जीत शिथिल मुख्यमंत्रियों के बल पर नहीं होगी। वह विजय नरेन्द्र दामोदर मोदी की सिंह गर्जनाओं और अमित शाह की चाणक्य-नीति के बल पर ही होगी।

१९वीं शताब्दी में अपनी दया और आनंद का प्रकाश विकीर्ण करने वाले देव दयानन्द की आभा २०वीं शताब्दी तक बनी रही- जगह जगह उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के उपदेशक, भजनोपदेशक, प्रचारक, भजनीक, शास्त्रार्थ कर्ता गाँव-गाँव और नगर-नगर पहुँचकर कभी- झाँझ खडताल, तो कभी हारमोनियम ढोलक बजाकर जनता जनार्दन को धूर्त धर्मध्वजियों से सचेत करते थे किन्तु २१वीं शताब्दी में आर्य समाज के अधिकारी दलों के दलदल में फँस कर रह गये। फलतः भूतप्रेत बैताल जिन्न अप्सरायें तंत्र मंत्र व्ही, क्लीं, फट् स्वाहा सभी किलकारियाँ भरने लगे- धर्म के और मजहब के ठेकेदारों की महफिलों सज गईं।

धर्म के नाम पर पाखण्ड लीला करने वाले और इन लीलाओं के साक्षी ऐसे गुरुओं के अतिरंजित महत्व को प्रदर्शित करने वाला श्लोक है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षत् परब्रह्म तस्मैः श्रीगुरुवेनमः।।

इस श्लोक को पहली बार चुनौती देने वाले थे- महर्षि दयानन्द सरस्वती। आओ, दुनिया के लोगों, महर्षि को प्रणाम करो, महर्षि दिव्यग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहते हैं-

"ब्रह्मा विष्णु महेश्वर और परब्रह्म- परमेश्वर के नाम हैं। उनके तुल्य गुरु कभी नहीं हो सकता। यह गुरु माहात्म्य गुरुगीता भी एक बड़ी पोपलीला है। गुरु तो माता पिता आचार्य और अतिथि होते हैं। उनकी सेवा करनी, उनसे शिक्षा लेनी देनी शिष्य और गुरु का काम है। परन्तु जो गुरु लोभी, क्रोधी, मोही और कामी हो, तो अर्घ्यपाद्य अर्थात् ताड़ना दण्ड, प्राणहरण तक भी करने में कुछ दोष नहीं।"

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१७८

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश

आर्य लोग बाहर से नहीं आये

(प्रश्न) कोई कहते हैं ये लोग ईरान से आये। इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ है। इनके पूर्व यहाँ जंगली लोग बसते थे कि जिनको असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे और उनका जब संग्राम हुआ उसका नाम देवासुर संग्राम कथाओं में ठहराया।

(उत्तर) यह बात सर्वथा झूठ है क्योंकि-

वि जोनीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।। ऋ.१/५१/८
उत शूद्रे उतार्ये।।

यह भी वेद का प्रमाण है-यह लिख चुके हैं कि आर्य नाम धार्मिक, विद्वान्, आप्त पुरुषों का और इनसे विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्र का नाम अनार्य अर्थात् अनाड़ी है।

जब वेद ऐसे लिखता है तो दूसरे विदेशियों के कपोलकल्पित को बुद्धिमान् लोग कभी नहीं मान सकते और देवासुर संग्राम में आर्यावर्त्तीय अर्जुन तथा महाराजा दशरथ आदि; हिमालय पहाड़ में आर्य और दस्यु म्लेच्छ असुरों का जो युद्ध हुआ था; उसमें देव अर्थात् आर्यों की रक्षा और असुरों के पराजय करने को सहायक हुए थे। इससे यही सिद्ध होता है कि आर्यावर्त्त के बाहर चारो ओर जो हिमालय के पूर्व आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान देश में मनुष्य रहते हैं उन्हीं का नाम असुर सिद्ध होता है। क्योंकि जब-जब हिमालय प्रदेशस्थ आर्यों पर लड़ने को चढ़ाई करते थे तब-तब यहाँ के राजा महाराज लोग उन्हीं उत्तर आदि देशों में आर्यों के सहायक होते थे और जो श्रीराम चन्द्र जी से दक्षिण में युद्ध हुआ है उसका नाम देवासुर संग्राम नहीं है किन्तु उसको राम-रावण अथवा आर्य और राक्षसों का संग्राम कहते हैं।

किसी संस्कृत ग्रन्थ वा इतिहास में

नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों को लड़कर, जय पाके, निकाल के इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है? और-

आर्यवाचो म्लेच्छवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः।।1।।
म्लेच्छदेशंस्त्वतः परः।।2।। मनु.

जो आर्य्यावर्त्त देश से भिन्न देश हैं वे दस्युदेश और म्लेच्छदेश कहाते हैं। इससे भी यह सिद्ध होता है कि आर्य्यावर्त्त से भिन्न पूर्व देश से लेकर ईशान, उत्तर, वायव्य और पश्चिम देशों में रहने वालों का नाम दस्यु और म्लेच्छ तथा असुर है और नैर्ऋत, दक्षिण तथा आग्नेय दिशाओं में आर्यावर्त्त देश से भिन्न रहने वाले मनुष्यों का नाम राक्षस है।

अब भी देख लो! हबशी लोगों का स्वरूप भयंकर जैसा राक्षसों का वर्णन किया है वैसा ही दीख पड़ता है और आर्य्यावर्त्त की सूध पर नीचे रहने वालों का नाम नाग और उस देश का नाम पाताल इसलिये कहते हैं कि वह देश आर्य्यावर्त्तीय मनुष्यों के पद अर्थात् पग के तले है और उनको नागवंशी अर्थात् नाग नाम वाले पुरुष वंश के राजा होते थे। उसी की उलोपी राजकन्या से अर्जुन का विवाह हुआ था अर्थात् इक्ष्वाकु से लेकर कौरव पांडव तक सर्व भूगोल में आर्यों का राज्य और वेदों का थोड़ा थोड़ा प्रचार आर्य्यावर्त्त से भिन्न देशों में भी रहा।

इसमें यह प्रमाण है कि ब्रह्मा का पुत्र विराट्, विराट् का मनु, मनु के मरीच्यादि दश्या इनके स्वायंभवादि सात राजा और उनके सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्य्यावर्त्त के प्रथम राजा हुए जिन्होंने आर्य्यावर्त्त बसाया है।

अब अभाग्योदय से और आर्य्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्य्यावर्त्त में भी आर्य्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भर राज्य इस समय नहीं है।

(क्रमशः)

वेद प्रवचन

नश्वर संसार से शाश्वत लाभ-प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करो

❑पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

(ऋग्वेद : 10/97/5)

शब्दार्थ-[हे मनुष्यो!] (**वः**) तुम्हारी (**निषदनम्**) जीवनस्थिति (**अश्वत्थे**) कल तक भी न ठहरनेवाले शरीर पर है और (**वः वसतिः**) तुमलोगों का वास (**पर्णे**) चंचल पत्र के समान कम्पित होनेवाले प्राण पर (**कृता**) किया हुआ है। इस पर भी तुम (**गोभाजः किल असथ**) इन्द्रियों के भोगों में संलग्न हो, अतः सावधान होकर (**पूरुषम्**) पूर्ण पुरुष को (**सनवथ**) प्राप्त करो!

व्याख्या-

मन्त्र में में दो बातें मुख्य रूप से कही गयी हैं। पहली यह कि इस संसार में कोई भी वस्तु ठहरनेवाली नहीं है। यह सब खेल थोड़े ही दिन रहता है। दूसरी यह कि इस भंगुरता को समझकर पुरुष हो तो पुरुषार्थ करके उस परम पुरुष को प्राप्त करो। खाने-पीने आदि भोग की वस्तुओं को जुटाने का नाम ही पुरुषार्थ नहीं है। असली पुरुषार्थ तो सांख्यकार कपिल मुनि के शब्दों में **'त्रिविध दुःखत्यन्तनिवृत्ति- रत्यन्तपुरुषार्थः'** है, अर्थात् 'तपश्चर्या द्वारा मोक्षप्राप्ति का नाम वास्तविक पुरुषार्थ है।'

संसार शब्द का अर्थ है जो नियमपूर्वक सरक रहा है, चल रहा है; जगत् शब्द का भी वही अर्थ है, जो गति कर रहा है। ये सभी शब्द इस तथ्य को प्रकट कर रहे हैं कि यहाँ कुछ भी टिकनेवाला नहीं है। आचार्य यास्क ने वार्ष्यायणि आचार्य का मत बताते हुए संसार के परिवर्तन को प्रकट करनेवाले ये भावविकार बताए हैं- **'षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्या- यणिर्जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति।'** कोई भी सांसारिक पदार्थ 'जायते'- पैदा होता है, 'अस्ति'-फिर उसकी दूसरी स्थिति आई है, इसके बाद तीसरी श्रेणी आई 'विपरिणमते'- उसका विपरिणाम होता है, फिर 'वर्धते' जितनी वह चीज बढ़ सकती है, बढ़ती है। इसके आगे 'अपक्षीयते' उसका धीरे धीरे ह्रास होता है और अन्त में 'विनश्यति'- वह वस्तु नष्ट हो जाती है।

जो विचारशील मनुष्य संसार के इस रूप को समझता है वह विद्या, बल और धन को प्राप्त करके मदोन्मत्त नहीं होता। हमारी आँखों-देखी बात है, इन्दिरा जी के प्रधानमंत्रित्व काल में आपातस्थिति लागू होने पर जिस इन्दिरा के प्रभाव को भारतीय अप्रमेय समझते थे, सन् ७७ के जनता शासनकाल में वही इन्दिरा एक सामान्य महिला के समान पुलिस द्वारा पकड़ी जाकर एक साधारण मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर हुई। इतिहास ने फिर करवट बदली और अबतक के राजनैतिक इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना हुई कि इतने स्वल्पकाल में प्रजातांत्रिक रूप से वही इन्दिरा फिर प्रधानमंत्री के पर पर बैठीं और जोश उबाल खाने लगा कि एक दिन उनका मनचला बेटा प्रातः यह कहकर मुस्कराता हुआ घर से निकला कि 'अम्मा! मेरे हवाई जहाज की कलाबाजी देखना' और एक डेढ़ घण्टे बाद ही हवाई जहाज के साथ गिरकर संसार से विदा ले गया। क्या सुंदर कहा किसी शायर ने-

रौनक चमन में आ गई, लेकिन न भूलना,
शायद खिजाँ छिपी हो, बहारों के आसपास।

उधर देखिये पड़ोसी देश पाकिस्तान में राजनीति के पर्दे पर कैसे-कैसे मार्शल और डिक्टेटर उभरे और चन्द दिन तूती बजाकर विस्मृति के गर्त में विलीन हो गए। वह अहंकारी भुट्टो, जिसने हिन्दुस्तानियों को कुत्ता कहा, वह अपने द्वारा ही कुर्सी पर प्रतिष्ठापित सैनिक सर्वाधिकारी द्वारा महान् अपराधी के समान फाँसी पर चढ़ा दिया। ठीक ही कहा है किसी शायर ने-

शुहरत की बुलन्दी भी पलभर का तमाशा है।
जिस शाख पे बैठे हो, यह टूट भी सकती है।।

इसलिए संसार के स्वरूप को बताते हुए इसे अश्वत्थ कहा। अश्वत्थ पीपल के वृक्ष को भी कहते हैं। पीपल का वृक्ष भी नश्वर है, किन्तु उस पीपल पर लगा पत्ता तो और भी शीघ्र नष्ट होने वाला है। एक वर्ष में पककर तो पतझड़ में झड़ ही जाएगा, किन्तु तेज हवा इससे पहले भी इसे तोड़ सकती है। यही बात यहाँ कही। वैसे तो संसार ही नश्वर है, किन्तु मानव शरीर तो पत्ते के समान और भी शीघ्र विनष्ट होने वाला है, अतः चेतावनी देते हुए कहा-इस स्थिति में भी तुम्हें इन्द्रियों के विषय प्रिय लगते हैं, इससे अधिक पशुता क्या होगी? अतः जितेन्द्रिय होकर इन्द्र बनो! विचार और तप का अत्यन्त पुरुषार्थ करके उस परम पुरुष को प्राप्त करो!

("श्रुति सौरभ" से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-१०२

कृताः कारागारा उपवनमथान्तःपुरमपि
विभिन्नाः प्रासादा विविधशिखरं मस्जिदमपि।
कृतो विद्याकेन्द्रो न न जनचिकित्सालय इह
महाघोरं तेषां महदपि तु दुःशासनमिदम्।।

निर्माण के नाम पर उन्होंने
देश में कारागार बनाये,
उपवन रचे, अन्तःपुर या
रनवास भी,
अनेक प्रकार के भवन एवं
विविध प्रकार के गुम्बदों वाली
मस्जिदें भी उन्होंने बनायीं !!
कोई विश्वविद्यालय स्थापित
नहीं किया और
न कोई जन-चिकित्सालय ही !!!
उनका शासन विशाल था !
परन्तु महाघोर था और दुःशासन था !!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

हम कैसे कह सकते हैं कि शाकाहार ही मनुष्य का नैसर्गिक आहार है, मांसाहार नहीं। *-सन्तराम वर्मा, पींड, बाराबंकी*

समाधान :

शाकाहार मनुष्य का आहार है, मांसाहार नहीं- इसकी पुष्टि में निम्नांकित १४ सूत्र सर्वसाधारण की जानकारी एवं लाभार्थ प्रस्तुत हैं :-

१. जन्म के समय मांसाहारी पशुओं की आँखें बन्द रहती हैं जबकि मनुष्य तथा शाकाहारी पशुओं की आँखें खुली रहती हैं।
२. मांसाहारी पशु जिह्वा से चाट कर पानी पीते हैं, जबकि मनुष्य तथा अन्य शाकाहारी पशु जिह्वा तथा होठों से पानी पीते हैं।
३. मांसाहारी पशुओं को पसीना नहीं आता है दौड़ने के बाद भी उनकी जिह्वा से पानी गिरता है। मनुष्य तथा शाकाहारी पशुओं को पसीना आता है और जिह्वा से पानी नहीं गिरता।
४. मांसाहारी पशु पक्षियों को दूर से ही बिना सड़े कच्चे मांस की गंध आती है और उनके पास गिद्ध, चील, कौआ, कुत्ता, बिल्ली, सियार आदि पहुँच जाते हैं। मनुष्य तथा शाकाहारी पशुओं को बिना सड़े कच्चे मांस की गंध नहीं आती है।
५. सभी प्राणी जन्म से ही अपना स्वाभाविक भोजन करना आरंभ कर देते हैं। मांसाहारी पशु बाल्यकाल से ही कच्चा मांस खाना आरम्भ कर देते हैं मनुष्य एवं शाकाहारी पशु जन्म से ही दूध फल व अन्नादि लेते हैं।
६. मनुष्य की शारीरिक संरचना किसी भी मांसाहारी पशु से नहीं मिलती।
७. मांसाहारी पशु भोजन चबा नहीं सकते हैं क्योंकि उनके दाढ़ें नहीं होती हैं, जबकि शाकाहारी पशु एवं मनुष्यों के दाढ़ें होती हैं, जिससे वे चबा सकें।
८. मांसाहारी प्राणियों के नुकीले दांत एवं पंजे कच्चे मांस को काटने व फाड़ने में समर्थ होते हैं जबकि मनुष्य व शाकाहारी पशु के दांत छोटे, समान व निकट होते हैं। मनुष्य के दांत और नख जो फल शाक भाजी और अन्न को ही काटने फाड़ने में समर्थ होते हैं।
९. मांसाहारी प्राणी केवल मांसाहार से ही जीवित रहते हैं किन्तु शाकाहारी प्राणी केवल मांसाहार से जीवित नहीं रह सकते।
१०. मांसभक्षी प्राणियों का निचला जबड़ा केवल ऊपर नीचे ही चलता है, दांये या बांये नहीं। यही कारण है कि वे मांस को केवल निगलते हैं चबाते नहीं।
११. मांसाहारी प्राणियों की जिह्वा कठोर और खुरदुरी होती है जबकि मनुष्य तथा शाकाहारी प्राणियों की जिह्वा कोमल और चिकनी होती है।
१२. मांसाहारी प्राणियों की आंते छोटी होती हैं अतः वे मांसाहार को सड़ने से पूर्व ही उत्सर्जित कर लेते हैं जबकि शाकाहारी प्राणियों की बड़ी आंते लगभग २५ फुट लम्बी होती हैं।
१३. मांसाहारी प्राणी दिन में सोते और रात में जगते हैं।
१४. मांसाहारी प्राणी क्रोधी व्याकुल और हिंसक स्वभाव वाले होते हैं।

अतः यह सिद्ध है कि मनुष्य की रचना शाकाहारी प्राणियों से मिलती है और मांस मनुष्य का आहार नहीं है।

-डॉ.सत्य प्रकाश
प्रकाश होम्यो हॉल, सदर बाजार, सण्डीला, जिला-हरदोई

(पृष्ठ 1 का शेष....)

हिन्दी भाषा...

उनके बाद आर्य समाज ने अनेक गुरुकुलों की स्थापना करके हिन्दी- साहित्य के प्रणयन में उल्लेखनीय योगदान किया। इन्द्र विद्यावाचस्पति ने 'आर्य समाज के इतिहास' में तो यहाँ तक लिखा है कि उनकी प्रेरणा से ही श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने बोलपुर के ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की थी जो बाद में शान्तिनिकेतन के रूप में विकसित हुआ।(प्रथम भाग, पृ.८७)

उन्होंने अपने विचारों का प्रचार करने की दृष्टि से कई पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की प्रेरणा उस समय के आर्य समाजों को दी थी। हिन्दी-भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन के लेखक डॉ.लक्ष्मीनारायण गुप्त ने स्वामी जी के जीवनकाल में प्रकाशित ऐसी तीन पत्रिकाओं की चर्चा की है।(पृ.१४५)

आर्यदर्पण-यह मासिक पत्र सं.१८७० में शाहजहाँपुर से निकला था और इसके सम्पादक थे मुंशी बख्तावर सिंह। यह सम्भवतः १९०६ तक जीवित रहा।

आर्यभूषण-यह सं.१८७६ में शाहजहाँपुर से ही निकला था और इसके सम्पादक भी मुंशी बख्तावर सिंह ही थे। यह दीर्घ जीवी नहीं हो सका पर पं.नरदेव शास्त्री इसे सबसे प्राचीन आर्य सामाजिक हिन्दी मासिक पत्र मानते हैं।

^**भारत सुदशा प्रवर्तक*** जो १८७६ से १९१२ तक मासिक पत्र के रूप में और फिर साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होता रहा। प्रारम्भ में इसका नाम ^**भारत सुदशा समर्थक***था लेकिन स्वामी जी ने इसका नाम बदलकर ^**भारत सुदशा प्रवर्तक*** कर दिया और स्वयं कुछ दिन तक इसका सम्पादन भी किया। इसके सम्पादक थे श्री गणेशप्रसाद शर्मा। यह पत्र लन्दन से भी वहाँ के आर्य समाज तथा मिस्टर फ्रेडरिक पिनकॉट और मिसेज आरण्डेल को भेजा जाता था। उनकी मृत्यु के बाद आर्य समाज ने इस क्षेत्र में जो काम किया उसे अभूतपूर्व ही कहा जा सकता है।

उनकी भाषा पर विचार करते समय एक तथ्य पर ध्यान देना होगा। वे किसी नये मत का प्रतिपादन नहीं करना चाहते थे। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि वे चाहते हैं कि

'सबका विचार एक होकर परस्पर प्रेम होके एक सत्य मतस्थ होवें।' (सत्यार्थ प्रकाश, पृष्ठ ४)

उनके विचारों से मतभेद हो सकता है और है भी लेकिन यह भी सच है कि इस ग्रन्थ ने अनेक महापुरुषों को प्रभावित किया। श्री दादाभाई नौरोजी जैसे व्यक्ति ने लोकमान्य तिलक से कहा था,

'मुझे स्वराज समर में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ से भारी प्रेरणा प्राप्त होती है।' (हिन्दी गद्य साहित्य, पृ.८३)

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अनेक क्रान्तिकारियों ने भी इसी ग्रन्थ से स्वाधीनता संग्राम की प्रेरणा ली थी।

हिन्दी गद्य के निर्माता के रूप में स्वामी दयानन्द का मूल्यांकन उनके युगीन परिप्रेक्ष्य में ही किया जा सकता है। वहाँ वे अप्रतिम हैं।

('भारतीय साहित्य के निर्माता : स्वामी दयानन्द सरस्वती' से साभार)

वाचनालय से

जीतन और पुनर्जन्म !

'दैनिक जागरण' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार लखीमपुर के मैलानी इलाके के तीन साल के जीतन की कहानी चर्चा का विषय बनी हुई है। जब जीतन तीन साल का हुआ, तो टूटी-फूटी बोली में अपनी माँ राम बेटी और पिता शिव कुमार से बातों-बातों में जिद करते हुए कहता कि मेरा घर तो 'भोलापुर' में है। मेरे पिता का नाम 'विदेशी' है।...बार-बार जिद करने पर पिता जीतन को 'भोलापुर' ले गये। 'विदेशी' को देखते ही जीतन चिल्लाकर बोलने लगा कि यही मेरे पिता हैं।...बच्चे ने अपनी पूर्व माँ व पत्नी को भी पहचान लिया।

'विदेशी' ने बताया कि उनका पुत्र दिलीप ठेकेदारी में काम करने बेंगलुरू गया और वहाँ २०१२ में ३० साल की उम्र में नहाते वक्त उसकी मौत हो गयी। अन्तिम संस्कार वहीं पर कर दिया गया था।...अपने से जुदा पुत्र दिलीप को 'जीतन' के रूप में देखकर 'विदेशी' के परिवार में भावनात्मक माहौल है।

श्राद्ध तर्पण किसका?

मासिक **'वैदिक संसार'** (इंदौर) में प्रकाशित लेख 'श्राद्ध तर्पण किसका?' में देशराज आर्य लिखते हैं : श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धा से युक्त, श्रद्धा से किया गया कर्म, विशेषकर वृद्धजनों एवं माता-पिता को जीवित रहते हुए सेवा करना। तर्पण का अर्थ भी तृप्त करना है। वास्तव में वृद्धजनों की सेवा ही श्राद्ध-तर्पण कहलाता है। आर्य संस्कृति की प्राचीन वैदिक परम्परा रही है। पावस (वर्षाकाल) के समय चतुर्मास के लिए ऋषि, मुनि, सन्त-महात्मा वन निवास को छोड़कर नगर के निकट बने हुए बाग-बागीचों, आश्रमों में वास करने के लिये आया करते थे तथा वे धर्मोपदेश एवं प्रवचनों से गृहस्थों को शिक्षा दिया करते थे। इन्हीं ऋषि मुनियों की सेवा भोजन, वस्त्र आदि से जनता किया करती थी। यह कार्य बड़ी श्रद्धा से किया जाता था। गृहस्थ इस अवधि में अच्छे से अच्छे भोजनादि से उन्हें तृप्त किया करते थे। यही श्राद्ध व तर्पण कहलाता था। कालान्तर में यह परम्परा समाप्त होती चली गयी। धूर्त, चालाक लोगों ने अपनी उदरपूर्ति हेतु पितृ श्राद्ध बताकर बढ़िया भोजन, वस्त्र एवं दान लेने की प्रथा चला दी। इस बात को शास्त्रोक्त सिद्ध करने हेतु पुराणों आदि मनुष्य कृत पुस्तकों में इसका विस्तार से उल्लेख कर दिया ताकि आने वाले समय में भी उस विशेष वर्ग के परिवारजनों को भी इस लूट का लाभ मिलता रहे।...आर्ष ग्रन्थों (वेद, उपनिषद, दर्शन एवं ब्राह्मण) में मृत श्राद्ध-तर्पण का कहीं भी उल्लेख नहीं है। मनुस्मृति, जिसको भारतीय संस्कृति की मुख्य धर्म पुस्तक माना जाता है, उसमें भी इसका उल्लेख नहीं है।

यज्ञ ही क्यों?

यज्ञ को केन्द्र में रखकर डॉ.धर्मवीर के प्रवचन की चौथी किस्त पाक्षिक **'परोपकारी'** (अजमेर) ने प्रकाशित की है। प्रवचन को लेखनीबद्ध करती हुई सुषमा आर्य लिखती हैं कि वेद मंत्रों के माध्यम से जब हम यज्ञ करते हैं, तो उससे यज्ञ के गुणों का बोध होता है, परमेश्वर की उपासना होती है और वेदों की रक्षा होती है।..यज्ञ कितने काम कर रहा है!...

स्वाभाविक रूप से हम हवन नहीं करते या नहीं करना चाहते, उसके पीछे एक ही कारण होता है कि हमको कमी महसूस नहीं होती कि इससे हमारा कोई नुकसान है या इससे हमको कोई हानि हो रही है।...श्वास-प्रश्वास आप प्रत्येक क्षण लेते हैं, तो आप ये बताओं कि आप की सांस कचरे के ढेर से आ रही है, या नहीं? आपने इसकी शुद्धि के लिये कौन सा प्रयत्न किया था? कौन सी झाड़ू लगायी थी? कौन सा पोंछा लगाया था? कौन सी शुद्धता का काम किया था, यदि आपने हवन नहीं किया!

डॉ.धर्मवीर कहते हैं कि वातावरण का भोजन अग्निहोत्र है। वातावरण में जिस चीज की कमी हुई है, उसी को तो पूरा करोगे। अग्निहोत्र के द्वारा वातावरण में उत्पन्न उन दुर्बलताओं को, उन कमियों को, उन अभावों को दूर किया जाता है, जो वातावरण में पैदा हो गये हैं।...कोई भी काम जब परमेश्वर के लिये होता है, तो वह यज्ञ बन जाता है।...हमारे यज्ञ से यदि परोपकार की सिद्धि होती है, तो यह यज्ञ है और न हो तो यज्ञ नहीं है!

सर सैयद का कुरान भाष्य

मासिक **'दयानन्द सन्देश'** (दिल्ली) में प्रकाशित राजेन्द्र जिज्ञासु के लेख 'सर सैयद का कुरान भाष्य' विचारोत्तेजक है। राजेन्द्र जिज्ञासु लिखते हैं कि सर सैयद ऋषि दयानन्द के समकालीन मुसलमान भक्तों में से एक गिने जाते हैं। वह ऋषि को भारत का आध्यात्मिक सम्राट और मनुष्य-समाज का एक ऐसा मौलिमणि समझते थे, जिस पर ईश्वरीय ज्ञान का अव्यवहित आविष्कार होता है। अतः उनके विचारों पर ऋषि का प्रभाव होना स्वाभाविक था। सर सैयद ने कुरान का भाष्य किया, जो इस समय दुष्प्राप्य है।

सर सैयद के भाष्य पर स्वामी जी के प्रभाव के कतिपय उदाहरण देखिए। शैतान या इब्लीस का शब्द जो महान कुरान में आया है, उस से कोई मनुष्येतर तत्व अभिप्रेत नहीं, किन्तु मनुष्य में जो आसुरी प्रवृत्ति या पशुभाव है, वह अभिप्रेत है। आदम और फरिश्तों और शैतान की कथा, जो कुरान में वर्णन की गयी है, वह किसी घटना का समाचार नहीं किन्तु एक रूपक है। परमेश्वर के अस्तित्व और गुणों तथा नामों और कार्यों के विषय में जो कुरान और हदीस में आया है, वह सब अलंकार और रूपक के ढंक से आया है। इसी प्रकार परलोक के विषय में लोगों का उठना, इकट्ठा होना, लेखा-जोखा, तुला, पुल, स्वर्ग और नर्क आदि सब भी अलंकार हैं, यथार्थ नहीं!

सर सैयद पर अरब के चार मुफ्तियों ने व्यवस्था दी कि यह पुरुष भटका हुआ है और भटकाने वाला है। शैतान का स्थानापन्न है। ●

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' अगस्त, २०१७ का अंक देखा। इस पत्र के सभी अंक पृथक्-पृथक् विशिष्ट सामग्री से भरे-पूरे मिलते हैं। इस अंक का श्री दीक्षानन्द सरस्वती कृत प्रथम आलेख 'जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, वहीं विजय है'-बहुत गहरे चिन्तन से ओत-प्रोत एवं अत्यन्त प्रेरणा-प्रद है। सम्पादकीय आलेख में आपने कीर्तिशेष श्रद्धेय डा.देवकीनन्दन श्रीवास्तव जी के प्रति जिस अडिग श्रद्धा भावना से 'गुरुदेव की शिक्षा- चतुर्थ प्रतिश्रुति' शीर्षक स्तम्भ लिखा है, वह सर्वथा अभिनन्दनीय है। गुरु के वचन किस प्रकार मूर्तरूप होकर दिखलाई पड़ते हैं, इसका निर्वचन आपने सच्ची निष्ठा के साथ किया है, वह आज की शिक्षा और शिक्षक-शिष्य सम्बन्ध को भी नई दिशा देने में समर्थ है। तभी तो श्वेताश्वतर उपनिषद् में गुरु-निष्ठा की फलश्रुति इस प्रकार दी गई है, "अर्थाः स्वयं प्रकाशन्ते" (तात्पर्य कि गुरुकृपा से अर्थ स्वयं ही प्रकाशित हो उठते हैं) अस्तु; इसके अतिरिक्त इस पत्र के 'जिज्ञासा और समाधान', 'वाचनालय से', 'मनुष्य का विराट रूप', 'अनन्त की खोज', 'शुभाकांक्षा', 'श्रीरामनाथ कोविन्द आर्य राष्ट्र के महान राष्ट्रपति हैं, उन्हें दलित कहना नासमझी है' आदि स्तम्भ/शीर्षक अत्यन्त प्रभावी हैं, जो अनेक वैयक्तिक सामाजिक सरोकारों के प्रति हमें पुनर्विचार के लिए चिन्तन की नई दिशायें देते हैं। 'काव्यायन' स्तंभ तो चित्ताकर्षक रहता ही है। इसमें कविवर रत्नाकर के 'उद्धव शतक' के श्रीकृष्ण के मातृभूमि विषयक दिए गए छन्दों के साथ ही श्री राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश' के 'तुलसी महत्व' विषयक छन्द भी अत्यन्त प्रशंसनीय हैं, जो भाव एवं शिल्प की दृष्टि से अत्युत्तम हैं। श्री रामकुमार गुप्त, श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', डॉ.कैलाश निगम, श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' एवं श्री बाँके बिहारी 'हर्ष' की कविताएँ भी हमारा मन प्रसन्न करने में सफल हैं।

इसके अतिरिक्त नगर तथा नगर के बाहर की विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों पर भी कुछ न कुछ उल्लेख्य सामग्री 'आर्य लोक वार्ता' के लगभग प्रत्येक अंक से मिलती रहती है। आपका यह पत्र 'देखत में छोटे, प्रभाव में गम्भीर' की उक्ति को साकार करता दिखता है। बड़ी-बड़ी अन्य पत्रिकाएँ भी इसके सम्मुख फीकी लगती हैं। अनेकानेक बधाइयाँ।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
७८, त्रिवेणी नगर-प्रथम, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का जुलाई २०१७ अंक पढ़कर प्रसन्नता हुई। मुखपृष्ठ पर वैदिक विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की प्रस्तुति 'आर्य हैं भारत... कहीं बाहर से आए नहीं' को दो बार ध्यान से पढ़ने के उपरान्त मन खिन्न हो गया यह सोच सोच कर कि किस प्रकार भारत की पुरातन संस्कृति, वेदों, उपनिषदों को बाहरी आक्रान्ताओं दार्शनिकों एवं हमारे देश के कुछ लोगों ने तोड़ मरोड़ दिया- दुष्प्रचार किया।

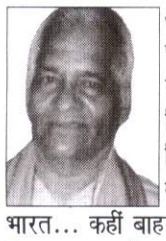

एक सहस्र वर्षों के बीत जाने पर भी हमारे सच्चे वैदिक विद्वानों, राष्ट्रभक्तों ने सत्य को सत्य कहा और दुष्प्रचार पर कुठाराघात किया। उक्त प्रस्तुति के प्रथम पैराग्राफ में ही महर्षि दयानन्द जी के अनुपम ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास के संदर्भ से ही मेरे मन की खिन्नता दूर हो गई। इसी लेख से ज्ञात हुआ कि हम आर्य उत्तरी ध्रुव के मूल निवासी नहीं थे और यह कि उत्तरी ध्रुव में तो सोमलता होती ही नहीं। वेदों को गड़रियों का गीत बताकर हमारे ही नहीं अन्य देशों के निवासियों को भी विदेशी साहित्यकारों, इतिहासकारों ने भ्रमित कर दिया था। स्वराज्य क्रान्ति की तथ्यात्मक पुष्टि महर्षि ने बहुत पहले ही कद दी थी, 'सत्यार्थ प्रकाश' में, भले ही वामपंथी और अविद्या में जी रहे कुछ दार्शनिक अभी भी सहमत न हों। 'आर्य्य लोक वार्ता' का प्रत्येक स्तम्भ व लेख ज्ञान वर्द्धक है- रुचिकर है तभी तो बहुत से नए पाठक इससे जुड़ने लगे हैं। मैं 'आर्य्य लोक वार्ता' की चतुर्दिक प्रगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

-पाल प्रवीण
एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक अपनी श्रेष्ठता के साथ निरन्तर प्राप्त हो रहा है। अगस्त अंक भी प्राप्त हुआ। 'जहाँ श्रीकृष्ण हैं, वहीं विजय है' लेख बहुत अच्छा लगा। सम्पादकीय तथा अनन्त की खोज ज्ञानवर्द्धक है। श्री जगन्नाथ रत्नाकर का श्रीकृष्ण का मातृ भूमि प्रेम अच्छा लगा।

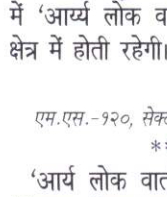

-आभा मिश्रा
लोकमान्य विद्या मन्दिर, सआदतगंज, लखनऊ

***

'आर्य्य लोक वार्ता' अगस्त अंक हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिसके हर पृष्ठ की पठन सामग्री शिक्षा प्रदान करने वाली है। पृष्ठ ५ पर 'अक्षर लोक' स्तम्भ में श्री अमृत खरे जी ने अन्य समीक्षाओं के साथ ही साथ विद्यासागर फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित 'महात्मा जलेश्वर मुनि जी' पुस्तक की समीक्षा भी प्रस्तुत की है। मैं उसके लिए श्री खरे जी को अनेकों धन्यवाद देता हूँ। पृष्ठ ८ पर आर्य लोक वार्ता के तत्वावधान में विख्यात सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती मधुर भण्डारी के अभिनन्दन समारोह की प्रकाशित विस्तृत रिपोर्ट को हमारा पाल-परिवार मेरठ, मवाना, दिल्ली व सिंगापुर, लंदन आदि में पढ़ेगा और सभी आनन्दित होंगे। हमारी बुआजी श्रीमती मधुर भण्डारी की कीर्तिगाथा चर्चा में रहेगी। प्रधान सम्पादक महोदय को साधुवाद-धन्यवाद। इसी पृष्ठ पर मेरे पितामह मेरठ गौरव श्री प्रियपाल जी की १०५वीं जयन्ती पर हुए यज्ञ व गोष्ठी का समाचार भी पाठकों के लिए प्रेरणा देने का काम करेगा। अन्य सभी स्तम्भ पूर्व की भांति अनुपम हैं। आशा है भविष्य में 'आर्य्य लोक वार्ता' की प्रगति हर क्षेत्र में होती रहेगी।

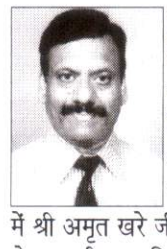

-अभिषेक
एम.एस.-१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' अगस्त अंक में योगेश्वर श्रीकृष्ण का योद्धा-रूप में चरित्र चित्रण वर्तमान समय में अत्यंत सम सामयिक एवं देशानुकूल है। आज अन्याय अत्याचार, विषमता, अशांति से जन जन त्रस्त है तथा देश वाह्य शक्तियों से पीड़ित है। ऐसे में योगेश्वर श्रीकृष्ण सा सबल सुयोग्य और सुविज्ञ नेतृत्व ही भारत को सुख-सुरक्षा और शांति प्रदान कर सकता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के सुअवसर पर दीक्षानन्द सरस्वती का शुद्ध चिन्तन हृदय में ओज और प्रेरणा भरने वाला है। सार्थक प्रस्तुति हेतु आभार। 'गुरुदेव की शिक्षा' सम्पादकीय सुसन्देश देता है कि सच्चे शिष्य को गुरु के आचार विचार से सीख लेनी चाहिए। 'सत्संग' में आपने विभिन्न यज्ञों के विषय में सम्यक ज्ञान प्रदान किया है जो जिज्ञासा निवारण के साथ जीवनोपयोगी भी है। 'अक्षर लोक' स्तम्भ की पुनर्वापसी सुखद लगी। दीर्घ अन्तराल से इसका अभाव खल रहा था। 'वाचनालय से' तथा 'विनय पीयूष' की विषय वस्तु मननीय तथा प्रशंसनीय है। शब्द-साधक श्री अमृत खरे को आत्मीय नमन। 'काव्यायन' में अवसरानुकूल विविध वर्णी रचनाएं सरस एवं मोहक हैं। एतदर्थ डॉ.कैलाश निगम, अबोध, राघवेन्द्र शर्मा 'ब्रजेश', राम कुमार गुप्त सुकवि साधुवाद के पात्र हैं। अन्य विषय वस्तु मानसिक पोषण प्रदान करती है। हृदयोद्गार विनम्र कामना सहित-

वैदिक आर्यसमाज का, कोई नहीं विकल्प।
सदाचरण हित आर्यजन, करें सुदृढ़ संकल्प।
दयानन्द जी ने किया, वेद-ज्ञान आह्वान।
मंगल पद अनुसारण से, भारत बने महान।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता अगस्त अंक यथा समय मिला। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर योगेश्वर श्रीकृष्ण का स्मरण अच्छा लगा। देश में जो आज प्रतिकूल परिस्थितियां हैं, उनसे निबटने के लिए योगेश्वर कृष्ण जैसा ही मार्गदर्शक चाहिए। देश के लिए शांति और युद्ध दोनों स्थितियां आवश्यक हैं इसके लिए श्रीकृष्ण का चिन्तन दर्शन सदैव अनुकरणीय है। आलेख अत्यंत विद्वत्तापूर्ण लगा। गुरु को समर्पित सम्पादकीय में शिक्षाप्रद संदेश प्रदान किया गया है। सत्यार्थ प्रकाश वार्ता, वेद प्रवचन जिज्ञासा और समाधान, शुभाकांक्षा सहित सभी स्तम्भ ज्ञानवर्द्धक जानकारी देते हैं। मनुष्य का विराट रूप और अनन्त की खोज में पठनीय सामग्री संग्रहणीय रहती है जिसको बार बार पढ़ने के बाद भी नई लगती है। काव्यायन में राम कुमार गुप्त, डॉ.कैलाश निगम, गौरीशंकर वैश्य विनम्र, ब्रजेश, अबोध आदि सभी की कविताएं पसंद आयीं। रत्नाकर के छन्दों से हृदया आह्लादित हो गया। पत्र लघु होते हुए भी विपुल साहित्य से भरापूरा रहता है। इसके लिए आपका परिश्रम प्रशंसनीय है। इसके बीस वर्ष की प्रकाशन यात्रा की सफलता हेतु बधाई।

-नमिता वैश्य, स.अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय, खालेगाँव, मसकनवा, गोंडा

***

आर्य लोक वार्ता जुलाई अंक में 'अक्षर लोक' स्तम्भ में प्रकाशित 'रमा सतसई' की समीक्षा पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई और 'रमा सतसई' को पढ़ने की इच्छा बलवती हुई। परिणाम स्वरूप मैंने 'आर्य लोक वार्ता' कार्यालय से 'रमा सतसई' की एक प्रति प्राप्त की। 'रमा सतसई' के दोहे सबकी समझ में आने वाले हैं और चित्त पर स्थायी प्रभाव छोड़ने वाले हैं। दोहों में नीति, भक्ति, प्रकृति, ऋतु इत्यादि बहुत विषयों से सम्बन्धित सुन्दर दोहे हैं। मैं आदरणीया रमा जी से बहुत पहले से परिचित हूँ। मैं यह कह सकती हूँ कि अगर रमा जी को अनुकूल परिस्थितियाँ और यथेष्ट प्रोत्साहन मिला होता तो वे दूसरी महादेवी होतीं। मुझे आशा है कि रमा जी अपनी अन्य काव्य रचनाओं से समाज का मार्गदर्शन करेंगी।

सुषमा मिश्र
बहर, जिला हरदोई

***

आर्य लोक वार्ता अगस्त अंक प्राप्त हुआ। यह नितांत सत्य है कि आज देश को चरित्रवान् श्रीकृष्ण जैसे योद्धा की आवश्यकता है जो देश को सही मार्ग दर्शन दे सके। सम्पादकीय में गुरुदेव की शिक्षा चतुर्थ प्रतिश्रुति बड़ी मनोवैज्ञानिकता से परिपूर्ण है और शिक्षा मिलती है कि कभी भी विचलित और हताश नहीं होना चाहिए, हर काम का एक निश्चित समय होता है तभी वह काम होता है। पं.शिव कुमार शास्त्री का 'वेद प्रवचन' बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, सफलता की तीन सीढ़ियां प्रत्येक को अपने आचरण में लानी चाहिये इससे जीवन अपने परम लक्ष्य को पाने में मोक्ष तक पहुंचाने में सहायक होगा। 'जिज्ञासा और समाधान' में विविध प्रकार के यज्ञों की जानकारी हुई। 'वाचनालय से' से मालूम हुआ कि हमारी गौशालायें कैसी होनी चाहिये इसके अलावा यज्ञ करने के क्या क्या लाभ होते हैं, भली प्रकार प्रकाश डाला गया है। कवितायें सभी उपयोगी हैं इसके अलावा स्वतंत्रता पर्व गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की कविता ज्यादा पसंद आई। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से संबन्धित कविताएं भी रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक हैं।

-प्रमोद कुमारी
सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

अक्षर लोक

कविवर चन्दन और उनकी सतसई
रचनाकार : देविका शुक्ला
प्रकाशक : शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स, १०२९५, लेन-१, वैस्ट गोरखपार्क, शाहदरा, दिल्ली-११० ०३३२
प्रस्तुति : हार्ड बाउण्ड, पृष्ठ:२४०,
मूल्य : ४०० रुपये

'कविवर चन्दन और उनकी सतसई' डॉ.देविका शुक्ला का शोध प्रबन्ध है। सतसई-परम्परा में बिहारी के उपरान्त मतिराम की तरह चन्दन की सतसई भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, ऐसा डॉ.शुक्ला का निष्कर्ष है। कविवर चन्दन का रचनाकाल सन् १७६३ से १८०० ई. के आसपास का है। १८-२०वर्ष पूर्व 'चन्दन सतसई' की एक जीर्ण पाण्डुलिपि प्रो.सूर्य प्रसाद दीक्षित को प्राप्त हुई थी, यह शोध उसी को समर्पित है।

प्रो.सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं कि सतसई एक गणनामूलक काव्य है। गागर में सागर भरने का उपक्रम है। दोहा जैसे लघु (मिताक्षरी) छन्द में बहुत कुछ कह जाना इस काव्य का वैशिष्ट्य माना जाता है। इस तरह का लेखन सिद्ध कवियों द्वारा ही संभव है। इन दोहों में गूढ़ोक्तियों की भरमार होती है। उनके अर्थ को खोलना कठिन कार्य है। इसके लिये भाषा-ज्ञान के साथ-साथ परम्परा का बोध होना चाहिए। डॉ.देविका ने इस कठिन कार्य को अपनी मौलिक सोच के साथ सम्पन्न किया है।

छः खण्डों में लेखिका ने 'चन्दन सतसई' के स्वरूप को स्पष्ट किया है यथा सतसई-काव्य की विकास-परम्परा एवं 'चन्दन सतसई', 'चन्दन सतसई' में भक्ति-भावना, 'चन्दन सतसई' में नीति-उपदेश, 'चन्दन सतसई' में शृंगार-नखशिख एवं नायिकाभेद चित्रण, 'चन्दन सतसई' में प्रकृति वर्णन और 'चन्दन सतसई' का अभिव्यंजना-सौष्ठव। सातवें खण्ड में उपसंहार करते हुए साहित्य में इसके महत्वपूर्ण स्थान को निर्धारित किया गया है।

'चन्दन सतसई' पर शोध कर चन्दन और उनके साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए डॉ.शुक्ला बधाई की पात्र हैं। ग्रन्थ संग्रहणीय है।

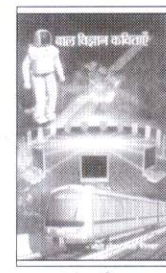

बाल विज्ञान कविताएँ
रचनाकार : गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
प्रकाशक : नमिता प्रकाशन, श्यामबिहार कालोनी, आई.आई.एम.रोड, लखनऊ-२०
प्रस्तुति : पेपर बैक
पृष्ठ : ४०
मूल्य : १०० रुपये

'बाल विज्ञान कविताएँ' शीर्षक के अनुरूप बच्चों के लिये विज्ञान विषयक कविताओं का संग्रह है। प्रणेता हैं गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'। संग्रह की कविताओं के माध्यम से कवि ने बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत करने का प्रयास किया है। निश्चित ही इन कविताओं से बच्चों का मनोरंजन होगा, ज्ञानवर्द्धन होगा और उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न होगा। कविताएँ उन विषयों पर हैं, जिनमें बच्चों की जिज्ञासा जुड़ी होती है यथा कम्प्यूटर, रोबोट, मोबाइल, पुच्छल तारे, इन्द्रधनुष आदि। इसमें विज्ञान सम्बन्धी पहेलियाँ भी हैं और रेखागणित की परिभाषाएं भी। कवि का सन्देश है : विज्ञान पढ़ो।

हर घटना का होता है, अवश्य कोई कारण।
सूझ-बूझ से शंका का होता है, सहज निवारण।
तर्कपूर्ण ढंग से सोचो तो दृढ़ विश्वास जगे,
जागरूकता से समाज में अन्ध विश्वास थमे।
क्या, क्यों, कैसे प्रश्नों से सुविचार गढ़ो।
गूढ़ रहस्यों को जानोगे, यदि विज्ञान पढ़ो।

धारावाहिक-(76)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

आत्म-निरीक्षण

(गतांक से आगे)

प्रतिष्ठा तो योग्यतानुसार ही मिल सकती है। यदि आप स्वयं अभद्रता की मूर्ति होंगे तो कोई आपको भद्र-पुरुष मानकर क्यों पूजेगा? यदि लोग आपकी बात नहीं सुनते तो आपको स्वयं देखना चाहिए कि आपकी बात सुनने या मानने लायक है भी या नहीं। यदि लोग आपको उल्लू बनाते या समझते हैं तो उन्हें बाद में दोष दीजिए। पहले यह तो सोचिए कि किसी के बनाने से आप उल्लू क्यों बन जाते हैं? आप में कुछ उल्लूपन होगा, तभी तो लोग दूसरों को छोड़कर आप ही को उल्लू बनाते होंगे। अपनी उन दुर्बलताओं को देखिए, जिनके कारण दूसरे लोग आपको कमजोर समझकर दबाते हैं। यह देखिए कि आप कुछ बुरी आदतों से लाचार तो नहीं हैं, आपके स्वभाव में दब्बूपन, मन में किसी प्रकार की मिथ्या धारणा और व्यवहार में कोई त्रुटि तो नहीं है? इस प्रकार आपको अपने अनेक दोषों का पता चल जायगा। उन्हें सुधारकर आप अपने को इस योग्य बना सकेंगे कि दूसरों के आगे आपको नीचा न देखना पड़े। आत्म-निरीक्षण का यही प्रयोजन है।

आगे हम कुछ दोषों के उदाहरण देते हैं। ऐसे दोष प्रायः स्वभावभूत होने के कारण अपने को स्पष्ट ज्ञात नहीं होते, परन्तु उनसे मनुष्य का व्यक्तित्व और व्यावहारिक जीवन बहुत कुछ दूषित हो जाता है। इनके आधार पर आप अपनी स्वयं परीक्षा कीजिए। संभव है, आपको अपनी कुछ अज्ञात भूलों का पता चल जाय।

३-आत्मवंचना

नारद-मोह की कथा बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने अतिसुन्दर रूप की मिथ्या कल्पना करके एक राजकुमारी को मोहित करने की चेष्टा की थी। भगवान् ने उन्हें बन्दर का मुख दे दिया था, किन्तु 'उर अंकरेउ गर्व-तरु भारी' के कारण उन्हें उसका ज्ञान नहीं था। स्वयंवर में लोग उन्हें बनाते थे, लेकिन वे तो अपने को रूपनिधान मान बैठे थे। उचक-उचककर उन्होंने बार-बार राजकन्या को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने उन्हें वानर समझकर उनका तिरस्कार किया। अन्त में बेचारे नारद को मूर्ख बनना पड़ा। शिव के गणों ने उनका उपहास किया। इस पर उन्होंने पानी में अपना मुंह देखा और क्षुब्ध होकर गणों को ही नहीं, भगवान् तक को शाप दे डाला। संक्षेप में यही नारद- मोह की कथा है। इस प्रकार का धोखा अनेक लोगों को होता है। अपने एक मिथ्यारूप की कल्पना करके वे अहंकार में फूले और भूले रहते हैं। दूसरों को तो वे सहस्र त्रुटियों से देखते हैं, परन्तु अपने को एक दृष्टि से भी नहीं देखते। अपना मुंह न देखना और अपने को कुछ का कुछ समझ लेना ही आत्मवंचना या मन का धोखा है। इसे सरल शब्दों में हम समझ की भूल भी कह सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप अनेक अनर्थ होते हैं।

कुछ उदाहरण लीजिए। बहुत-से लोग अपने विषय में इस प्रकार के विचार रखते हैं-मैं सर्वथा निर्दोष हूँ, अन्य लोगों में कोई न कोई दोष अवश्य है; एकमात्र मैं ही सच्चा हूँ, दूसरे लोगों का कोई भरोसा नहीं है, मुझमें बुद्धि अधिक है, और अन्य लोगों में मूर्खता; मैं जितने काम का हूँ, उतने का दूसरा आदमी नहीं हो सकता; जो कुछ मैं समझता हूँ, वही ठीक है, वैसा ही होना उचित है, आदि-आदि। ये सब मन के धोखे हैं। इनके कारण लोग बहक जाते हैं। उन्हें अपनी अयोग्यता का ध्यान नहीं रहता। अमेरिका के एक धर्मगुरु ने कहा है कि जहाँ कोई व्यक्ति अपने को अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक योग्य या बुद्धिमान् समझता है, वहीं उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है- "The weakest spot in every man is where he thinks himself to be the wisest." *-Emerson*

किसी ज्ञान-दुर्विदग्ध को देखिये तो इस कथन की सत्यता प्रमाणित हो जाएगी। ज्ञान-दुर्विदग्ध वह है जो अल्पज्ञ होकर भी अपने को सर्वज्ञ मान लेता है। ऐसा व्यक्ति अपने में तो अनेक गुणों की और दूसरों में नाना दोषों की कल्पना करके स्वयं बहुत चतुर बनने की चेष्टा करता है। उसका गला भले ही खराब हो, लेकिन वह बड़े-बड़े गवैयों का गौरव लूटने का दुस्साहस करेगा। 'मति अति रंक मनोरथ राऊ'-तुलसी। इसका परिणाम क्या होता है? परिणाम वही होता है जो 'बीछ मंत्र न जानहिं, साँप पिटारे हाथ' वाले का होना चाहिए। हम एक ऐसे मूर्ख को जानते हैं जो कम पढ़ा-लिखा होकर भी यह समझने लगा कि वह पुलिस-कप्तान होने की योग्यता रखता है। पुलिस की पोशाक पहनकर वह घर में और साथियों के बीच कप्तानी का अभिनय करता है और अकारण पैर पटककर चलता है। लोग हँसते हैं, लेकिन उनकी हँसी का गूढ़ आशय मूढ़ की समझ में नहीं आता। असली कप्तान से पत्र-व्यवहार करने का भी उसे शौक है। अपने पत्रों में वह अपने 'पुलिसत्व' का प्रदर्शन तो करता है, लेकिन वह प्रदर्शन कैसा होता है, इसको इसीसे समझिये कि वह 'कप्तान' को 'कपत्तान' लिखता है। इस प्रकार जब किसी व्यक्ति में जोश अधिक और होश कम होता है, अर्थात् जब उसका मन बढ़ जाता है या मिजाज नहीं मिलता, तब उसे धोखा होता है। न तो उसे मनोवांछित प्रतिष्ठा मिलती है और न सफलता। पतलून की ताक में वह अपनी लंगोटी भी गंवा देता है।

आत्मवंचना का एक दूसरा उदाहरण यह है-कुछ लोग स्वयं अयोग्य होकर भी अपने को, केवल बड़े बाप का बेटा होने के कारण बड़ा मानते हैं। बहुत-से कंगाल भी बाप-दादों की रईसी का भार ढोते हुए मिलते हैं। उनके चरित्र से नकली बड़प्पन प्रकट होता है। ऐसे लोगों के लिए यह कहावत है-'रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई।' इसी को दंभ कहते हैं-अर्थात्, जो न हो उसका अभिमान और विज्ञापन करना। सामर्थ्य से अधिक अभिलाषायें कभी पूरी नहीं होतीं। जो व्यक्ति शक्ति से अधिक पराक्रम दिखाना चाहता है, वह अपने साथ विश्वासघात करता है।

कुछ और उदाहरण लीजिये। कुछ लोग ऊपरी ठाठ-बाठ, वेश-भूषा को अपना तथा दूसरों का स्वरूप मान लेते हैं। उनकी दृष्टि में जो पतलून पहनता है वह साहब बहादुर है, जो बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने और बालों को ठीक से कटाये-छँटाये तथा सँवारे रहे वह भला आदमी है।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (32)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

आनन्द

(गतांक से आगे)

प्राचीन आर्ष प्रज्ञा ने जीवन की इयत्ता पर गम्भीर विचार किया है। आर्ष विचार बुद्धि की यान्त्रिक प्रक्रिया नहीं है। तथ्य के आधार पर बुद्धि द्वारा तर्क के प्रयोग को और उससे उपलब्ध होने वाले परिणाम को विचार कोटि में नहीं स्वीकार किया जा सकता। आर्ष विचार का अर्थ सत्य का प्रत्यक्षीकरण है। प्रत्यक्षीकरण इन्द्रिय सन्निकर्ष से प्राप्त होने वाला परिणाम नहीं है। सत्य साक्षात् के लिए इन्द्रियाँ पदार्थ के गुणों का अनुभव करती हैं और मन तथा आत्मा के संयोग से गुणी का प्रत्यक्षीकरण होता है। आर्ष विचार से तात्पर्य उस प्रत्यक्षीकरण से है जिसके द्वारा सत्ता को उसकी समग्रता से जाना जाता है। विचार शब्द की व्युत्पत्ति जिस धातु से की गई है वह गत्यार्थक है। अभीप्सित दिशा में समग्र सत्ता के साथ गति का नाम विचार है। प्रमेय प्रमाता की सत्ता में तदरूप होकर उसकी समस्त चेतना को स्वरूपाकार कर लेता है। अनुभूति की यह घनिष्ठता विचार शब्द का अभिप्रेत है। औपनिषदिक ऋषि पूषा से प्रार्थना करते हुए हिरण्मय पात्र के आवरण को भेद कर सत्य दर्शन का आग्रह करते हैं।

वैदिक काल में इन विचारकों की संज्ञा ऋषि थी। निरुक्तकार (यास्क) के मत में 'ऋषयः साक्षात्कृत धर्मणः' अर्थात् जिन्होंने धर्म का साक्षात्कार किया है ऋषि हैं। ज्ञान की प्रामाणिकता ऐसे ऋषियों द्वारा ही होती है। प्रमाणवादियों ने आप्त वाक्य को भी प्रमाण माना है। महर्षि दयानन्द ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में 'आप्तः खलु साक्षात्कृतः धर्मः' स्वीकार किया है। आचार्य वात्स्यायन भी आप्त वाक्यों को प्रमाण मानते हैं। भर्तृहरि आप्त पुरुषों के वाक्य को अनुमान के द्वारा वाचित होने वाला नहीं मानते। आप्त पुरुषों को गौरवमय पद और सर्वोच्च प्रामाणिकता इस कारण से नहीं प्रदान की गयी कि वह बहुश्रुत अथवा बहु पठित है। शुद्ध ज्ञान के लिए जिस प्रकार की विशिष्ट मनःस्थिति का निर्धारण ऋषियों द्वारा किया गया था वह आप्त पुरुषों की स्तुत्य योग्यता है। मल विक्षेप आवरण से रहित अन्तःकरण अप्रतिबद्धता एवं सत्य के ग्रहण एवं असत्य के त्याग की तत्परता इन आप्त पुरुषों की विशेषता है। भर्तृहरि कहते हैं इन महापुरुषों की चेतना अपरिछिन्न उस महाकाल के साथ हैं जो भूत भविष्य और वर्तमान की सीमाओं से परे है। अर्थात् अखण्ड, अव्यय एकरस काल से संयुक्त होकर परिणामशील कार्य के नित्य कारण को प्रत्यक्ष करती है। अतः आप्त पुरुषों का विचार आर्ष दर्शन कोटि में आता है।

आविर्भूत प्रकाशानामनुप्लुत चेतसाम्।
अतीतानागत ज्ञानं प्रत्यक्षान्नतिरिच्यते।।
अतीन्द्रियान संवेद्यान् पश्यन्त्यार्षेण चक्षुषा।
ये भावान् वचनं तेषां नानुभावेन बाध्यते।।

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के मानववाद की व्यंजना में आप्त पुरुषों को समावेशित नहीं किया जा सकता। मानववाद विभिन्न अर्थों में व्यवहृत होता रहा है। उसकी अर्थ व्याप्ति में धार्मिकता का अभाव और मध्ययुगीन मनोवृत्ति का विरोध, यूनानी जीवन दृष्टि और इन्द्रिय जन्य सुखों के महत्व की घोषणा इह लोकवाद, बुद्धिवाद और व्यक्तिवाद, मानव जीवन और अनुभूति के महत्व में आस्था इत्यादि स्वीकृत होते रहे हैं। प्रोफेसर एडवर्ड चेनन के अनुसार मध्य युग के बाद से मानववाद की अवधारणा यह रही है कि मनुष्य ही ज्ञान और प्रमाण का केन्द्र है। यूनानी सोफिस्ट विचारक प्रेटोगॉरस की यह उक्ति कि-'मनुष्य ही सब चीजों का माप या मापदण्ड है।' स्पष्ट न होने के कारण तथा अति व्याप्ति दोष के कारण स्वीकार नहीं की जा सकती। आप्त पुरुष भी मनुष्य कोटि में आते हैं। इस दृष्टि से मनुष्य ही ज्ञान का केन्द्र और प्रमाण है, स्वीकार्य है। किन्तु प्रोफेसर चेनन और प्रेटागॉरस इस बात का स्पष्टीकरण नहीं कर सके कि वह जिस मनुष्य को यह महत्व प्रदान कर रहे हैं वह किस कोटि का है? मनुष्य समूह में तो हम प्रत्येक प्रकार का मनुष्य देखते हैं ज्ञान और विवेकशील, अज्ञान और मूर्ख, सामान्य और असामान्य इत्यादि। यह निश्चित है कि जिस मनुष्य को यह गौरव पूर्ण स्थान दिया जायगा वह विशेष योग्यता या पात्रता वाला होगा। एतद्दशीय ऋषियों ने जैसा कि आप ऊपर भर्तृहरि की उक्ति देख चुके हैं मनुष्य और उसके अनुभव को उच्चस्थान प्रदान किया है किन्तु वह मनुष्य जो प्रमाण है विशेष योग्यता वाला निश्चित किया गया है। मानवीय अनुभूति वैयक्तिक रुचि एवं उपादेयता व्यवस्थित ज्ञान सापेक्ष होती है। अतः प्रैग्मैटिस्ट दर्शन पूर्णतया वस्तु परक तटस्थ विवेचना को मान्यता प्रदान नहीं करता। उनके मन्तव्यानुसार मानव विवक्षा पूर्णतया तटस्थ होकर वस्तुपरक विवेचना करने में असमर्थ है। वैयक्तिक रुचि एवं प्रयोजन के आधार व्यवथित ज्ञान, संस्कार गुम्फित मन मानव पर्यवेक्षण एवं विवेचना को तटस्थ नहीं रहने दे सकते। परिणाम स्वरूप वस्तुपरक विवेचना के स्थान पर आत्मपरक अवधारणा का स्थापन होता है। परम्परागत व्यवहारवाद का यह सिद्धान्त सतह पर बड़ा आकर्षक दिखायी देता है किन्तु भ्रामक चिन्तन का अपराधी है। यह आवश्यक नहीं है कि हमारी समस्त अनुभूतियाँ रुचि सापेक्ष हों। आद्यतन वैज्ञानिक उपलब्धियाँ एवं आविष्कार की प्रेरणा तद्तद् वैज्ञानिकों के हृदय में विभिन्न कारणों से हुयी हों किन्तु ध्वनि प्रकाश इत्यादि की इस आधारशिला को मनुष्य वस्तुपरक शुद्धानुभूति नहीं कर सकता है, विज्ञान ने उखाड़ फेंका है। ठीक इसी प्रकार आध्यात्मवाद जिसकी एक शाखा का नाम विज्ञान है नितान्त सत्तापरक अस्तित्व की व्याख्या करता है। इसलिए आप्त पुरुषों की अन्तः स्थिति किंवा गुणात्मक व्यक्तित्व पर विशेष ध्यान दिया गया है। चित्त शुद्धि, मल विक्षेप, आवरण रहित बुद्धि एवं निर्दोष इन्द्रिय समूह आप्तत्व के लिए नितान्त अनिवार्य तत्व है।

प्राचीन मनीषा ने सर्गारम्भ की प्रथम उषा में बौद्धिक क्षितिज पर निर्झरित शुभ्र प्रकाश में जिज्ञासा का नेत्र खोला। अज्ञात को ज्ञात में लाने की चैतन्यगत ईप्सा, सीधा सरल जीवन अपने आप में ही शुद्ध ज्ञान की पात्रता थी। दीर्घकाल तक गुरु शिष्य परम्परा में जिज्ञासा की यह प्रवृत्ति ज्ञान की सहस्रों शाक्षा उप शाखाओं को प्रस्फुटित करती रही। प्रयास का नैरन्तर्य अध्ययन और पर्यवेक्षण के नये आयाम उद्घाटित करता रहा। अस्तित्व के रहस्यात्मक अवगुण्ठन को अनावृत्त करके प्रकृति सुन्दरी के कार्य

कलाप की मनोहारिणी झांकी लेने वाले ऋत दृष्टा कवि आर्य जीवन के उद्घोषक रहे हैं। सहस्राब्दियों के प्रयोग नैरन्तर्य ने जीवन की दोषरहित पद्धति का गठन किया। पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना के मूल में जीवन को अधिक से अधिक व्यापक करने की लालसा रही। वैयक्तिक जीवन की नैतिकता पारिवारिक आदर्श एवं सामाजिक मूल्य एक अक्ष के साथ गूँथे गए। संस्कृति और सभ्यता की वह धुरी प्राचीन वाङ्मय की सार्थकता आनन्द है। आनन्द की मांग मानव की चिरन्तन पिपासा है। वरेण्य जीवन इस अर्थ में आनन्दपूर्ण माना जाता है कि सर्वज्ञ चैतन्य की सापेक्षता में आत्मगत अल्पज्ञता का अनुभव किया गया है। आनन्द मानसिक या बौद्धिक अवधारणा न होकर अनुभूति की वह स्थिति है जिसमें चैत्य पुरुष अस्तित्व की यथातथ्यता के साथ तद्वत होकर विराट की पवित्रता सौन्दर्य का अवतरण जैव धरातल पर करता है। आर्ष सन्दर्भ में मानसिक, प्रतीपत्व, बौद्धिक सम्भ्रम का परिहार आनन्दोपलब्धि है। यह कहना समीचीन न होगा कि आनन्द अभिधायक अथवा निगेशन है। आर्ष परिप्रेक्ष्य में प्रतीक एवं सम्भ्रम की निवृत्ति का अर्थ ऋजुता और यथार्थ दर्शन है। पातंजलि ने यथार्थ दर्शन को ज्ञान संज्ञा प्रदान की है। समस्त ज्ञान राशि का अभिव्यंजक ब्रह्म शब्द आनन्द अर्थ में ग्रहण करके ऋषियों ने इसके विधायकत्व को स्थापित किया है। ज्ञान ही आनन्द है और आनन्द ही ज्ञान का डिमडिम घोष समस्त आर्ष वाङ्मय में श्रोतव्य है। आनन्दोपलब्धि मानव जीवन की सार्थकता है। समुअल बटलर के शब्दों में दुर्भाग्यवश मनुष्य के अतिरिक्त सब प्राणी जानते हैं कि जीवन का चरम लक्ष्य आनन्द प्राप्ति है।

आनन्द के आध्यात्मिक यथार्थ का मानसिक एवं ऐन्द्रिक धरातल पर अवतरण आर्ष जीवन की विशिष्टता है। क्रान्तदृष्टा कवियों ने मानसिक धरित्री से उद्भूत होने वाली प्रत्येक रागात्मक धारा को चाहे उसका अधिष्ठान विभत्स रस ही क्यों न हो मूल तत्व आनन्द के साथ अनुस्यूत किया हुआ है। रस निष्पत्ति का साफल्य बोधा के आनन्दानुभूति पर निर्भर करता है। रस का रसत्व आनन्द ही है। 'रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति'। ऋजु पन्थी आर्ष मनीषा ने कर्मण्यतारहित नितान्त काल्पनिक रसिक भावुकता को हीनतम माना है। दिवास्वप्न फान्तसी को जीवन दर्शन में कोई स्थान नहीं दिया गया है। औपनिषदिक ऋषि रस निष्पत्ति सुकृत के द्वारा मानते हैं। 'कृ' धातु की अर्थ व्याप्ति में 'सु' विशेषण का संयोजन कर्म के लोक मांगलिक होने का द्योतक है। ''यद्वैतंत्सुकृतं रसो वै सः'' शिव सौन्दर्य तत्व से युक्त कर्म जिस रस को निष्पन्न करते हैं वह रस आनन्द तत्व है। सत्य, शिव, सौन्दर्य की त्रिवेणी ही जगद्रचना में एकाकार है। यही विश्व प्रपंच की प्रयोजनीयता है। इन गुणों से मनोमय पुरुष का अलंकरण ही साधना की चरम सिद्धि है।

(क्रमशः)

काव्यायन

माँ

❑उमेश 'राही'

घनी रेत में जलधार जैसी माँ,
जिन्दगी एक नाव, पतवार है माँ!!

गहन शीत में गुनगुनाती धूप जैसी,
तपती दोपहर में घनी छाँव है माँ!
जिंदगी का हर गरल जहाँ अमृत बने-
प्यार का ऐसा अनमोल गाँव है माँ।।

पाँव के छालों पर मरहम सरीखी,
सभी के लिए नेह-बौछार है माँ!!

सम्बन्ध के पंक में खिला हो कमल जैसे,
बिछौने पर स्नेह के मखमल सरीखी,
समेटे हृदय में दर्द सारा गुनगुनाए-
प्यासों के लिए नदी के जल सरीखी।।

मर मिटी है आँख के तारे के लिए,
बिन मांगे मिले वह उपहार है माँ!!

अपनी जिंदगी में एक मशाल है माँ,
न कोई सीमा, इतनी विशाल है माँ,
ताप सहती पर किसी से कुछ न कहती-
जिस हाल में रखो, खुश है माँ।।

घनघुप अंधेरे में एक दीप जैसी,
पतझरों में खिली बहार है माँ!!

तोड़कर सम्बन्ध विलग जो हो गये हैं,
संजोए उनके लिए भी स्नेह सलौना माँ!
व्रत रखकर मनाती मन्नतें उनके लिए भी-
जिनके लिए है एक टूटा खिलौना माँ।

क्षमा का भंडार, स्नेह का शृंगार,
जो हर दिन मने, वह त्यौहार है माँ!!

–राजहंस अपार्टमेंट, इन्द्रापुरम, गाजियाबाद–201014

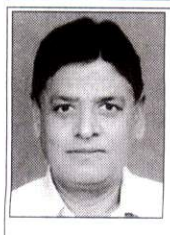

प्रकृति की ओर

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

आओ चलें प्रकृति की ओर।
होलें हम आनन्द विभोर।

प्रातकाल का दृश्य अपूर्व,
उगता सूर्य दिखेगा पूर्व,
हँसी-खुशी का भाव जगाता,
'चूँ चूँ चूँ' चिड़ियों का शोर।।

कितने हरे-भरे हैं जंगल,
करते हैं जो सबका मंगल,
खेतों में छायी हरियाली,
झूम-झूम कर नाचे मोर।।

शीतल हवा चल रही मन्द,
देते सुन्दर फूल सुगन्ध,
ऊँचे पर्वत, झरने, झील,
नदियाँ कल-कल भरें हिलोर।।

वातावरण को स्वच्छ बनायें,
जीव जन्तु को नहीं सतायें,
करें न पर्यावरण प्रदूषित,
जल-संरक्षण पर दें जोर।।

आओ चलें प्रकृति की ओर।।

–117, आदिल नगर, विकासनगर, लखनऊ

राष्ट्रभाषा

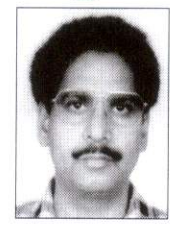

❑डॉ. कैलाश निगम

गैर की जुबान
अपमान का प्रतीक और
हिन्दी अपनी तो
स्वाभिमान का प्रतीक है।
अँगरेजी चेतना का
अवसान करती है
भारती हमारी
दिव्य-ज्ञान का प्रतीक है।
करती प्रकाशित है
निजता के गौरव को
अपने फहरते
निशान का प्रतीक है।
राष्ट्रभाषा का विकास
राष्ट्र का विकास और
राष्ट्र भाषा
राष्ट्र के गुमान का प्रतीक है।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

हिन्दी

❑रमा आर्य 'रमा'

हिन्दी को है हिन्द में, मिला नहीं अधिकार।
मार रही है देखिए, इंगलिश डंक पसार।।

जिसे नागरी से 'रमा', रहा नहीं हो प्यार।
उसको माँ की गोद का, मिले नहीं अधिकार।।

चाहे जाति अनेक हो, चाहे धर्म अनेक।
किन्तु भारती के लिए, 'रमा' सभी जन एक।।

हिन्दी भाषा राष्ट्र की, हिन्दी सबकी शान।
हिन्दी का यश गान हो, हो हिन्दी का मान।।

जन-जन की भाषा 'रमा', हिन्दी गरिमावान।
हिन्दी में सीखे पढ़े, ज्ञान और विज्ञान।।

हिन्दी ही अरमान है, हिन्दी है वरदान।
आओ हम मिलकर करें, हिन्दी का उत्थान।।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

आत्म परिचय

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

कथनी में है यकीन करनी का क्या भरोसा,
बाँट देता हूँ टॉफी, खाता हूँ समोसा।

माँग लेता हूँ भुट्टा, मुँह में हैं दांत नहीं,
पड़ें न हों पदचिन्ह, ऐसा कोई प्रान्त नहीं।

वासी अवधपुरी का, नाम है बाँके बिहारी,
उपनाम है 'हर्ष', कविता की है बीमारी।

फैजाबाद सिविल लाइन से, बढ़ती है शान मेरी,
अवध मोटर वर्क्स है, असली पहचान मेरी।

जलसा अगर शमा है, तो मैं हूँ परवाना,
अखबार सभी पढ़ता हूँ, 'ए.एल.वी.'का दीवाना।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

उस छवि सा न कोई छविमान है!

❑ठा.गोपालशरण सिंह

आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रारंभिक दिनों में यह माना जाता था कि ब्रजभाषा का माधुर्य खड़ी बोली में नहीं आ सकता है- किन्तु हिन्दी खड़ी बोली के छन्दों में भी ब्रजभाषा का माधुर्य उड़ेल देने का श्रेय जिस कवि को प्राप्त हुआ- उसका नाम है- ठाकुर गोपाल शरण सिंह। -सम्पादक

वन उपवन में सरोज में सरोवर में,
सुमन सुमन में उसी की सुघराई है।
चम्पक चमेलियों में, नवल नवेलियों में,
ललित लताओं में भी उसकी लुनाई है।
देख पड़ती है रंग रंग के विहंगमों में
सुषमा उसी की कुंज कुंज में समाई है।
सब ठौर देखो वही छवि दिखलाई देती,
उर में समाई तथा लोचनों में छाई है।।

नित्य नई शोभा दिखलाई है, लुभाती वह,
किसमें सलोनी सुघराई कहो ऐसी है।
केतकी की कुन्द की कदम्ब की कथा है कौन,
कल्पलतिका में कहाँ कान्ति उस जैसी है।
रति में रमा में रमणीयता कहाँ है वैसी,
कनकलता में कमनीयता न वैसी है।
छहर-छहर छहराती है छबीली छटा,
अहा! वह सुघर सजीली छवि कैसी है।।

सुषमा उसी की अवलोक के सुधाकर में,
रूप-सुधा पीकर चकोर न अघाते हैं।
वन की छटा में नव निरख उसी की छटा,
मंजुल मयूर होते मोद-मद-माते हैं।
फूलों में उसी की छटा देख के मिलिन्द-वृन्द,
फूले न समाते 'गुन-गुन' गुण गाते हैं।
दीप्यमान दीपक में देख वही छवि बाँकी,
प्रेम से प्रफुल्लित पतंग जल जाते हैं।।

तेजधारियों में है कृशानु का भी मान बड़ा,
किन्तु भानु सबसे महान तेजवान है।
पादपों में पारिजात पर्वतों में हिमवान,
नदियों में जान्हवी मनोज्ञता की खान है।
मोर-सा मनोहर न कोई खग रूपवान,
फूल कौन दूसरा गुलाब के समान है।
यद्यपि सभी हैं उपमान इन्हें मान चुके,
किन्तु उस छवि-सा न कोई छविमान है।।

हिन्दी–दिवस

लोकमानस की गंगा है

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

चंद विद्यापति की, कबीर सूर जायसी की,
तुलसी रहीम मीरा रसखान वैखरी।
केशव बिहारी देव पद्माकर भूषण की,
भारतेन्दु, गुप्त, निराला, प्रसाद निर्झरी।
पंत महादेवी, श्री, पढ़ीस, दिनकर, काका,
वंशीधर, नागार्जुन, नीरज वागीश्वरी।
अनगिन सुमनों की सौरभ बिखेर रही,
विश्व-मंच पर भाषा हिन्दी प्रतिभा भरी।।

महाकोश है समाज धर्म-अर्थ-नीति का ये,
वैज्ञानिक तकनीक - ज्ञान - अनुषंगा है।
चिन्तन, विचार, चर्चा, लेखन-सम्भाषण का,
माध्यम सरल, सर्वग्राहिता अभंगा है।
महावीर, शुक्ल, हजारी, नगेन्द्र, बाजपेयी,
विद्या, शर्मा, नन्दन, सु-सेविता शुभंगा है।
संस्कृति-संवाहिका है, देववाणी-दुहिता ये,
हिन्दी लोक-मानस की निर्झरी है, गंगा है।।

राष्ट्र की भाषा का सूर्य अभी
भी विवाद के बादलों बीच ढका है।
भारत-भारती-अस्मिता का रथ,
सत्य-संकल्प बिना अटका है।
साहित्य-विभाजित खेमों में है,
न अश्लीलता-नग्नता का खटका है।
लक्ष्य न लोक के मंगल का रहा,
कैसी हवा का लगा झटका है।।

–78, त्रिवेणीनगर–1, सीतापुर रोड, लखनऊ

हरदोई-समाचार

श्री रामनाथ कोविंद आर्यराष्ट्र के महान् राष्ट्रपति हैं, उन्हें दलित कहना नासमझी है

सबको सदैव शुचि, स्वाध्याय सीख देती-
'आर्य लोक वार्ता' अभी भी अविजित है।
शिष्टाचार सदाचार सभ्यता सुसांस्कृतिक,
जीवन में जिनके श्रेष्ठ सद्गुण फलित हैं।
विधिशास्त्र न्यायशास्त्र धर्मशास्त्र काव्यशास्त्र,
मेधा बुद्धि श्रद्धा- उर करुणा कलित है।
रामनाथ कोविंद महान् आर्य राष्ट्रपति-
कौन मतिमंद इन्हें कहता दलित है।।

(डॉ. वेद प्रकाश आर्य)

(गतांक में पृष्ठ ७ पर डॉ.सत्य प्रकाश जी, सण्डीला, हरदोई के वक्तव्य के साथ प्रकाशित उपर्युक्त छन्द का अंतिम चरण फाइनल सेटिंग के दौरान छपने से रह गया। आप जानते ही हैं कि कवित्त एक ऐसा छन्द है, जिसका सादा दारोमदार अंतिम चरण पर रहता है। अस्तु, इस अंक में उक्त छन्द को पाठकों के आग्रह पर सम्पूर्ण रूप में पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। -सं.)

राजस्थान-समाचार

गायत्री मंत्रोच्चार के साथ तैयार किया गया 6325 लोगों ने औषधीय काढ़ा पिया

कोटा, १० सितम्बर। डेंगू व स्वाइन फ्लू से बचाव हेतु छावनी सब्जीमंडी में औषधीय काढ़ा पिलाया गया। लक्ष्मी वेलफेयर सोसाइटी व आर्य समाज जिला सभा कोटा के संयुक्त तत्वावधान में काढ़ा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। लक्ष्मी वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष गिर्राज प्रसाद शर्मा ने बताया कि आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में श्योराज वशिष्ठ, रामचन्द्र मलिक, पतंजलि योग समिति के जिला अध्यक्ष प्रदीप शर्मा ने यह औषधीय काढ़ा तैयार किया। कार्यक्रम संयोजक किशन गोपाल नामा व सौभागमल राठौर ने बताया कि आज प्रातः १० बजे से काढ़ा वितरण प्रारम्भ किया गया जो कि सायं ५ बजे तक ६३२५ महिला-पुरुष, बच्चों ने लाइन लगाकर यह औषधीय काढ़ा पिया। सैकड़ों लोग स्टील के बर्तनों, कांच की बोतलों में भरकर काढ़ा अपने परिवार के लिए लेकर गए। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि औषधीय काढ़ा पीने से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इस अवसर पर लक्ष्मी वेलफेयर सोसाइटी के सगीर अहमद अंसारी, चेतन कुमार शृंगी, सुधीर तंवर, छीतर सिंह, बजरंग लाल राठौर, भीमराज गुर्जर, दौलतराम जोगी, नर्बदा शंकर योगी, आर्य समाज के श्योराज वशिष्ठ, राजीव आर्य ने काढ़ा वितरण में सहयोग दिया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

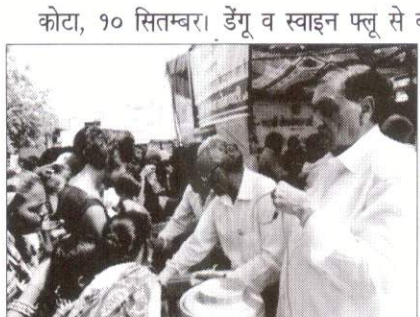

राजस्थान प्रवास के दौरान महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

(श्री पाल प्रवीण द्वारा विशेष रिपोर्ट)

दि. ६ से १२ सितम्बर, २०१७ तक लगभग एक सप्ताह मैं राजस्थान प्रवास पर अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कमलेश जी के साथ रहा। इस प्रवास-काल की प्रथम उपलब्धि- श्री अवधेश तिवारी जी से भेंट थी, जो सम्प्रति उदयपुर में सिंडीकेट बैंक के रीजनल मैनेजर हैं और जिन्हें स्व.पन्नालाल तिवारी, लखनऊ का ज्येष्ठ पुत्र होने का गौरव प्राप्त है। ध्यान रहे, श्री पन्नालाल जी अलीगंज वैदिक सत्संग, लखनऊ के प्रमुख प्रकाश स्तम्भ तथा डी.ए.वी.कालेज लखनऊ के सेवा निवृत्त शिक्षक और आधुनिक लखनऊ के निर्माता स्वनामधन्य पं.रासबिहारी तिवारी की वंशपरम्परा के बहुमूल्य रत्न थे। स्व. पन्नालाल तिवारी की स्मृति आज भी सबके दिलों में रची बसी है। श्री अवधेश तिवारी ने भेंट वार्ता में अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में कुछ करने का संकल्प व्यक्त किया। क्योंकि श्री पन्नालाल जी अपने जीवन के अंतिम दिनों में 'आर्य लोक वार्ता' के साथ गहराई से जुड़े हुए थे। अतः पिता की स्मृति में आयोजन में उन्होंने 'आर्य लोक वार्ता' के सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की।

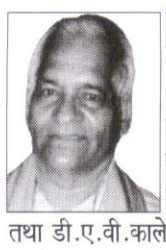

राजस्थान-प्रवास की द्वितीय उपलब्धि सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य से भेंट वार्ता थी। श्री अशोक आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा अजमेर, स्व.आचार्य धर्मवीर एवं कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की। अनेक तथ्यों से अवगत होने का सुअवसर मिला। अशोक आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश की नवीनतम प्रकाशित प्रति भी भेंट की।

सीतापुर-समाचार

हिन्दी सभा सम्मान समारोह

१०.०९.१७। महान हिन्दी सेवी डॉ. गणेशदत्त सारस्वत की ८१वीं जयन्ती हिन्दी सभा सीतापुर नरोत्तम हाल में मनायी गयी। इस अवसर पर हिन्दी के सुविख्यात विद्वान्, लेखक और कवि डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' को डा. गणेशदत्त सारस्वत स्मृति सम्मान तथा कवयित्री श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी को सुषमा सारस्वत स्मृति सम्मन प्रदान किया गया एवं 'मानस चन्दन' पत्रिका के ८८वें अंक का विमोचन हुआ। डॉ. सारस्वत के साहित्यिक अवदान पर डा.अरुणा त्रिवेदी, रमा रमन त्रिवेदी, गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', मंजु शुक्ला, अरुणेश मिश्र, डा.शितिकण्ठ, डा.सुनील कुमार सारस्वत ने अपने उद्गार प्रकट किये। कार्यक्रम में अवधेश शुक्ल, दिनेश मिश्र 'राही', शांतिशरण 'व्यंग्य', उमा शंकर त्रिवेदी, भगौती गुप्ता, राम गोपाल अवस्थी, अभिषेक वैश्य, आशीष मिश्रा, पुनीत, विनोद गुप्ता, रमेश निषाद, सुधांशु त्रिवेदी आदि की गरिमामयी उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन रजनीश मिश्र ने किया। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

हरियाणा-समाचार

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर

२०.०८.१७। महर्षि दयानन्द शिक्षण

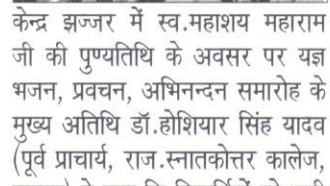

केन्द्र झज्जर में स्व.महाशय महाराम जी की पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ.होशियार सिंह यादव (पूर्व प्राचार्य, राज.स्नातकोत्तर कालेज, झज्जर) ने कहा कि विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करनी चाहिए और शिक्षक भी ऐसी शिक्षा दें जिससे विद्यार्थी आगे चलकर समाज व देश की सेवा कर सकें। विशिष्ट अतिथि आदर्श अध्यापिका श्रीमती सुमित्रा देवी (कोषाध्यक्ष, जिला वेद प्रचार मण्डल, झज्जर) एवं समाज सेवी श्रीमती फूलकौर दलाल ने कहा कि सुख और दुःख हमें अपने कर्मों के अनुसार मिलता है। इसलिए हमें अच्छे कार्य करने चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं.रमेशचन्द्र वैदिक, प्रधान वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर ने की। आदर्श छात्रा कु.कनिका जिन्दल ने यज्ञ सम्पन्न कराया। लाला प्रकाशवीर आर्य (मंत्री, आर्य समाज झज्जर), धर्म सिंह, कृष्ण जांगड़ा (योग शिक्षक, भारत स्वाभिमान झज्जर), पं.जय भगवान आर्य, प्राध्यापक द्वारका दास, ब्र.कृष्ण जी, धर्मेन्द्र, नरेश, ओम प्रकाश शर्मा, कृष्ण शास्त्री, भगवान सिंह आदि महानुभावों ने भी समारोह को सम्बोधित किया। विजय आर्य, मंत्री आर्य समाज थर्मल पावर पानीपत ने मंच का संचालन किया। आदर्श अध्यापिकाएं-कु. कौशल जी, श्रीमती कान्ता जी; छात्राएं-मोनिका, ईशा, छवि, सारिका; छात्र-साहिल, अंकुश, कार्तिक, युगम, युग नामक २० सज्जनों को नमस्ते लेमिनेटेड फोटो से सम्मानित किया गया। वेदमंत्र पाठी कन्याओं एवं साधकों को वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। *(सुभाष आर्य)*

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा का 126वाँ वार्षिकोत्सव

शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह के सफल आयोजन के पश्चात् आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकरनगर का १२६वाँ वार्षिक उत्सव दि. २ से ५ नवम्बर २०१७ तक समारोह पूर्वक मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा के प्रांगण में आयोजित होगा। चार दिवसीय इस महोत्सव में देश-विदेश के विद्वानों और संगीतज्ञों को भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया है। विद्वानों में आचार्य धर्मबन्धु (गुजरात), डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री (अमेठी), सन्तोष कुमार वेदालंकार (लखनऊ), पं.दीनानाथ शास्त्री (लखनऊ) तथा भजनोपदेशकों में श्री युगल किशोर आर्य (कोलकाता), भीष्म आर्य (बिजनौर), सत्यप्रकाश आर्य (बाराबंकी) के नाम उल्लेखनीय हैं।

भव्य शोभा यात्रा, बृहद् यज्ञ, कवि सम्मेलन, महिला सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुरस्कार वितरण इस समारोह के आकर्षण होंगे। बाहर से पधारने वाले आर्य जनों के निवास और भोजन इत्यादि की व्यवस्था आर्य समाज टाण्डा द्वारा की जाती है किन्तु इसके लिए मंत्री, आर्य समाज टाण्डा जिला अम्बेडकरनगर पर पूर्व सूचना दे देना निरापद रहता है। पुस्तक विक्रेता गण तिथियाँ नोट कर लें।

लखनऊ-समाचार

गीतिका गंगोत्री सम्मान समारोह

राष्ट्रीय पुस्तक मेला, मोती महल वाटिका, लखनऊ में कविता लोक सृजन संस्थान के सौजन्य से हिन्दी गीतिका के अट्ठाइस रचनाकारों को 'गीतिका गंगोत्री' सम्मान से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ.अनिल मिश्रा ने की। मुख्य अतिथि सर्वेश अस्थाना तथा विशिष्ट अतिथि डा.अमिता दुबे की उपस्थिति में सम्मान प्राप्त करने वाले गीतिकाकारों में मधुकर अस्थाना, रामदेव लाल विभोर, गौरी शंकर वैश्य विनम्र, डा.अजय प्रसून, राहुल द्विवेदी स्मित, राम कुमार गुप्ता, डा. हरि फैजाबादी, मनोज मानव, डा.मंजु श्रीवास्तव, कुमार तरल, सौरभ राजन शशि, उमाशंकर शुक्ल, डा.प्रेमलता त्रिपाठी, नागेन्द्र सोनी, रेनू द्विवेदी, सुनील त्रिपाठी आदि सम्मिलित रहे। दूसरे सत्र में गीतकाकारों ने गीतिका-पाठ किया। इस अवसर पर गीतिका गंगोत्री स्मारिका (सम्पादक ओम नीरव) का विमोचन भी हुआ। आयोजन में साहित्यानुरागी श्रोताओं की भारी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन ओम नीरव तथा सुनील त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से किया। *(विनम्र)*

महिला उत्थान समिति कव्य गोष्ठी

श्रीमती आभा मिश्रा एवं श्री हरि प्रसाद मिश्र के संयोजकत्व में स्थानीय लोक मान्य विद्या मंदिर में माँ वाणी के प्रांगण में श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य' की अध्यक्षता में महिला उत्थान समिति की काव्य गोष्ठी सम्पन्न हुई। गोष्ठी के मुख्य अतिथि मुरली मनोहर कपूर एवं विशिष्ट अतिथि भोजपुरी कवि श्री राम बहादुर अधीर रहे। गोष्ठी का संचालन प्रसिद्ध गजलकार मंजुल मंजर लखनवी ने किया

काव्य गोष्ठी महिला उत्थान समिति की अध्यक्षा कवयित्री आभा मिश्रा की सरस्वती वनदना से आरम्भ हुई। काव्य गोष्ठी में श्रीकृष्ण द्विवेदी 'द्विजेश', राम प्रकाश शुक्ल 'प्रकाश', प्रदीप गुप्त, हरि प्रसाद मिश्र 'असीम', घनश्याम शुक्ल, श्रीमती मीरा चौरसिया तथा श्रीमती रामा आर्य 'रमा' ने अपनी श्रेष्ठ रचनायें पढ़ीं। हरि प्रसाद मिश्र 'असीम' के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात सूक्ष्म जलपान के साथ गोष्ठी का समापन हुआ। *(आभा मिश्रा)*

डॉ.अग्रवाल का जन्म दिवस

२४.०८.२०१७, इन्दिरा नगर। भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद् के संचालक, आर्य समाज लालबाग के पूर्व मंत्री, कृषि विशेषज्ञ डॉ.मोहन लाल अग्रवाल के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में समस्त पारिवारिक जनों ने भाग लिया। विशेषकर श्रीमती सावित्री अग्रवाल, शोभा अग्रवाल, अर्पिता अग्रवाल के अलावा श्री राजेश 'आग्नेय', वी.के.सक्सेना इत्यादि ने यज्ञ में भाग लिया तथा डॉ.अग्रवाल के दीर्घायुष्य की शुभ कामनाएँ व्यक्त कीं। आचार्य जी ने डॉ. अग्रवाल की कर्मठता और विचारशीलता की सराहना की। आपने कहा- डॉ. अग्रवाल के जीवन से वार्द्धक्य की परवाह न करते हुए निरन्त आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

आर्य विद्वत्सहायता निधि-एक सराहनीय प्रयास

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के वर्तमान प्रधान डॉ.धीरज सिंह ने जीवन भर आर्य समाज के प्रचार कार्य में संलग्न रहने वाले संन्यासी, विद्वानों, प्रचारकों के रुग्ण अथवा वृद्धावस्था की दशा में सहायतार्थ 'आर्य विद्वत्सहायता निधि' स्थापित करने का जो निर्णय लिया है (आर्य मित्र, १२ सितम्बर, १०१७) वह वस्तुतः अत्यधिक सराहनीय प्रयास है, चिरकाल से इसकी आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा था। इस निधि का पृथक् से जो खाता खोला गया है, उसका सम्पूर्ण विवरण भी प्रकाशित कर देना उचित है। साथ ही विश्वसनीयता हेतु सहायता की पात्रता के निर्धारण हेतु एक निष्पक्ष समिति का भी गठन जरूरी होगा।

इस प्रयास हेतु डॉ.धीरज सिंह को मैं साधुवाद देता हूँ तथा आर्य जगत के समृद्ध दानी मानी व्यक्तियों से उक्त कोष में अधिकाधिक धनराशि जमा करने का भी अनुरोध करता हूँ।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

शिक्षक सम्मान समारोह

५ सितम्बर, २०१७, स्थान-आर्य समाज महावीरगंज, कुर्सीरोड, लखनऊ में वैदिक यज्ञ के अनन्तर दो आदर्श महिला शिक्षकों एवं दो आदर्श पुरुष शिक्षकों को सम्मानित किया गया। साथ ही ख्यातिलब्ध आर्य संन्यासी स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती को भी सम्मानित किया गया, जो आकांक्षाओं से भी अधिक भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। *(पाल प्रवीण)*

लखनऊ-समाचार

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज राजाजीपुरम

आर्य समाज, राजाजीपुरम के तत्वावधान में ११ से १४ सितम्बर २०१७ तक वेद प्रचार सप्ताह सोत्साह मनाया गया। विभिन्न आर्य परिवारों में वैदिक यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश का क्रम चलता रहा। वेदोपदेश हेतु आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, आर्षगुरुकुलम, जानकीपुरम को आमंत्रित किया गया था। जिन परिवारों में वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, उनके नाम इस प्रकार हैं- श्री बी.एन.सक्सेना, श्री टी.एन.श्रीवास्तव, श्री अनिल जैन एवं दीपक ज्वेलर्स। सप्ताह के सभी आयोजन श्री निरंजन सिंह, प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता, आनन्द जी के संरक्षण एवं श्रीमती स्नेहलता जी के संयोजन में सम्पन्न हुए। क्षेत्र के निवासियों तथा आर्यसमाज राजाजीपुरम के सदस्यों के साथ ही श्रीसत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, जानकीपुरम के आर.के.शर्मा एवं अन्य सदस्यों की भागीदारी ने सप्ताह को विशेष रूप में सफल बनाया। *(सं.सू.-आनन्द मनीषी)*

आर्य समाज चन्द्रनगर

वैदिक राष्ट्र के सम्पादक तथा आर्य सभा म.प्र. के अध्यक्ष श्री भानुप्रताप वेदालंकार, आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर का शुभागमन आर्य समाज चन्द्रनगर लखनऊ में हुआ। आपने प्रातःकालीन सत्संग को सम्बोधित किया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने प्रत्येक मास के तृतीय रविवार को अपने नियमित प्रवचन में 'आचार्यवान् पुरुषोवेद' के आधार पर शिक्षाओं का विवेचन प्रस्तुत किया।

आर्य समाज हसनगंज डालीगंज

आर्य समाज हसनगंज, डालीगंज का चार दिवसीय पारिवारिक वेद प्रचार कार्यक्रम दि. ७ से १० सितम्बर २०१७ तक बड़े उत्साह के साथ परिवारों में सम्पन्न हुआ-श्री कृपा शंकर शर्मा, आशा भवन, बरौलिया(०७.०९.१७), श्री देवेन्द्र नाथ चौधरी, रामाधीनसिंह रोड, डालीगंज(०८.०९.१७), डा.अरविन्द नाथ पाण्डेय, मनकामेश्वर मंदिर के पीछे, डालीगंज(०९.०९.१७) तथा समापन कार्यक्रम(१०.०९.१७) पं.दीनानाथ शास्त्री के विज्ञान खण्ड, गोमती नगर, निकट भरवारा रेलवे क्रासिंग स्थित आवास पर हुआ, जिसमें न्यास परिवार की भी भागीदारी रही। लखनऊ विश्वविद्यालय के डा.सत्यकेतु, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, डा.सत्यकाम के सारगर्भित प्रवचन हुए। आचार्य सत्य प्रकाश, प्रियंका शास्त्री एवं गुरुकुल नरैला हरियाणा की डा.अंजू सिंह चौधरी ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में ब्रिगेडियर अमिताभ, इं.अनुपम धीर, मुकेश मित्तल, आई.ए.एस. तथा जिला सभा के प्रधान श्री नवनीत निगम, आर्य समाज महावीरगंज के श्री सर्वमित्र की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

अन्त में पं.दीना नाथ शास्त्री ने आर्य समाज डालीगंज के आयोजकों तथा सभी विद्वानों एवं आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया तथा भोजन व्यवस्था के साथ कार्यक्रम का समपन हुआ। समस्त कार्यक्रमों का संचालन आर्य समाज डालीगंज के प्रधान श्री प्रेममुनि ने किया। *(आनन्द चौधरी, एडवोकेट)*

महानगर के वरिष्ठतम नागरिक दिवंगत

६ सितम्बर, २०१७। ५४५/५२, पुराना महानगर, लखनऊ निवासी, क्षेत्र के

वरिष्ठतम नागरिक श्री यदुनाथ सिंह का २८.०८.१७ को १०३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप श्री नागेन्द्र नाथ सिंह के मामा थे। यदुनाथ सिंह ने जीवेम शरदः शतम् का लक्ष्य हासिल किया। वे एक अत्यंत योग्य निःस्पृह विचारशील, श्रेष्ठ आचरण सम्पन्न व्यक्ति थे। श्री सिंह अपनी पीछे दो पुत्र महीन्द्र नाथ सिंह, और योगेन्द्र नाथ सिंह तथा एक बेटी का परिवार छोड़ गये हैं। स्व.यदुनाथ सिंह की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का वैदिक विधि से उनके आवास पर ०६.०९.१७ को वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में आयोजन किया गया, जिसमें समस्त पारिवारिक जनों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। यज्ञ में श्री महीन्द्रनाथ सिंह, उनकी पत्नी श्रीमती इन्दुबाला सिंह, पौत्र मनीष कुमार सिंह, सुश्री कामना सिंह(पौत्री) एवं श्री शशीन्द्र नाथ सिंह ने विशेष रूप से आहुतियाँ अर्पित कीं। अंत में दो मिनट मौन रहकर सभी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन श्री नागेन्द्र नाथ सिंह ने किया।

महेश पाण्डेय को पत्नी शोक

लालमंडी टोला, आगामीर ड्योढ़ी, ०८.०९.१७। लखनऊ के जाने माने कवि, 'ब्रज कुमुदेश' पत्रिका के सम्पादक मण्डल के प्रमुख स्तम्भ, आर्य लोक वार्ता के प्रमुख सहयोगी श्री महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' की सहधर्मिणी श्रीमती कुसुमलता पाण्डेय का ५० वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे दो पुत्रियाँ छोड़ गई हैं जो अभी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। श्रीमती पाण्डेय एक कुशल गृहिणी तथा व्यवहार प्रवीण देवी थीं। उनके आकस्मिक निधन से विशेषकर साहित्यिक क्षेत्रों में शोक की लहर दौड़ गई है। वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रामा आर्य 'रमा', श्रीमती आभा मिश्रा, सागर संस्कृति एवं सांस्कृतिक संस्थान के अध्यक्ष श्री वी.एस.पाण्डेय, पीयूषरत्न पाण्डेय, गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', अमृत खरे, कैलाश निगम आदि अनेक काव्य शिल्पियों ने श्रीमती पाण्डेय के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। 'आर्य लोक वार्ता' की श्रद्धांजलि!

श्रीमती प्रभा नागू नहीं रहीं

श्रीमती प्रभा नागू (श्री पाल प्रवीण की पुत्रवधू श्रीमती गीतांजली की माता) का दि. २५.०८.१७ को देहावसान हो गया। वे कुछ दिनों से गंभीर रूप से अस्वस्थ थीं। उनकी पुण्य स्मृति में दि. २८.०८.१७ को उनके पुत्र के आवास सेक्टर-ई, अलीगंज में शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया; जहाँ दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर काफी संख्या में पारिवारिक एवं आत्मीय जन उपस्थित थे। श्रीमती नागू अपनी पीछे एक पुत्री गीतांजली नागू तथा एक पुत्र को छोड़ गई हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक श्रद्धांजलि!

'आर्य लोक वार्ता' अरुणोदय के समान

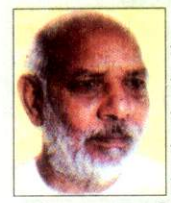

ठाकुर विक्रम सिंह ने किया आमंत्रित

राष्ट्रीय क्षितिज पर मिली पहचान

रविवार, १७ सितम्बर, १०१७ को प्रातः १० बजे से १ बजे तक आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली में 'आर्यन समारोह' का भव्य आयोजन करने वाले ठाकुर विक्रम सिंह ने 'आर्य लोक वार्ता' को आमंत्रित करते हुए जो पत्र लिखा है- उसे हम यहाँ ज्यों का त्यों प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है, इससे विगत १६ वर्षों से 'आर्य लोक वार्ता' के निष्ठावान् स्वाध्यायशील पाठकों का आर्य समाज तथा वैदिक संस्कृति की सेवा करने वालों का मनोबल बढ़ेगा।

मनु संस्कृति संस्थान (पंजी.)

दिल्ली कार्यालय	मेरठ कार्यालय

श्रीमान
आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंग रोड,
इंदिरानगर, लखनऊ–226016
फो: 09450500138

आपने साहित्य के क्षेत्र में आर्य समाज की महती सेवा की है। आपका ऋण किसी भी प्रकार से नहीं उतारा जा सकता। साहित्य के बिना जीवन अधूरा है। अगर सत्यार्थ प्रकाश ना होता तो आज का समाज स्वामी दयानंद को कैसे जानता और इन पाखण्डों पर कैसे वज्रपात होता। आप कार्यक्रम में अवश्य ही पधारे। आपका सम्मान कर हम गौरव का अनुभव करेंगे।

धन्यवाद

आपका
ठाकुर विक्रम सिंह
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)
राष्ट्र निर्माण पार्टी

दिनांक : 14.08.2017

डॉ.सूर्यकुमार पांडे सम्मानित

०३.०९.१७। 'सुन्दरम' साहित्यिक संस्थान की मासिक काव्यगोष्ठी में डॉ. सूर्य कुमार पांडे का सारस्वत सम्मान किया गया जिसकी अध्यक्षता नरेन्द्र भूषण ने की। मुख्य अतिथि डा.अजय प्रसून रहे। काव्यगोष्ठी का शुभारंभ मंजुल मंजर की वाणी वन्दना से हुआ जिसमें अनिल श्रीवास्तव, हरि फैजाबादी, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', शिवम मिश्रा, विपिन मलिहाबादी, अमिता सिंह, शिवनाथ सिंह, महेश प्रसाद पाण्डेय, के.पी.तिवारी 'पुंज', वी.सी.राय, सुरेश गुप्त, अखिलेश श्रीवास्तव व्यथित, श्रीमती रत्ना बापुली, आभा मिश्रा, शोभा दीक्षित, भावना, अलका त्रिपाठी, मृत्युंजय गुप्ता, मंजुल मंजर लखनवी ने सरस कविताओं का पाठ किया। संचालन हरिमोहन वाजपेयी ने किया। *(विनम्र)*

आर्य समाज गोमती नगर

'आर्य लोक वार्ता' के कई पाठकों ने यह जानना चाहा है कि गोमती नगर में आर्य समाज कहाँ पर है? यों तो गोमती नगर में आर्य समाज की गतिविधियाँ कई वर्षों से संचालित होती रही हैं किन्तु वर्तमान में (१) आर्य समाज गोमती नगर के प्रधान श्री बालगोविन्द पालीवाल हैं तथा (२) महिला आर्य समाज की प्रधान सुश्री सुमन पाण्डेय हैं। विशेष जानकारी उपर्युक्त व्यक्तियों से मिल सकती है जिसका विवरण इस प्रकार है-

(१) श्री बालगोविन्द पालीवाल, प्रधान, श्री सौरभ सिन्हा, मंत्री, आर्य समाज गोमती नगर, लखनऊ। अस्थाई पता-३/४५२, विनम्र खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। मो-९७९२३७३४९४

(२) सुश्री सुमन पाण्डे, प्रधान, महिला आर्य समाज, गोमती नगर। पता-२/६, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। मो-९४१५०१६५०५।

पुस्तक मिली

आपको स्मरण होगा 'आर्य लोक वार्ता' के 'शुभाकांक्षा' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित पत्र में अंग्रेजी साहित्य के विद्वान् डॉ.महेश सिंह कुशवाहा, पूर्व अध्यक्ष-अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्व विद्यालय ने एक पुस्तक 'क्रियात्मक मनोविज्ञान' का पता लगाने हेतु पाठक वर्ग से अनुरोध किया था।

डॉ.सिंह ने सूचित किया है कि उक्त पुस्तक उन्हें प्राप्त हो गई है। जिन सूत्रों से यह पुस्तक प्राप्त हुई है, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। -सं

भावी कार्यक्रम

आर्य समाज आदर्श नगर, आलमबाग लखनऊ का वार्षिक समारोह आगामी दिनांक ८ से १० फरवरी २०१८ को आर्य समाज मंदिर में समारोह पूर्वक मनाया जायगा। इस समारोह को सफलता प्रदान करने हेतु आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी एवं श्री कुलदीप आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आर्य समाज के मंत्री श्री सतीश निझावन ने सभी आर्यजनों से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

आर्य समाज राजाजीपुरम का निर्वाचन

आर्य समाज वेद मंदिर, राजाजीपुरम का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

आचार्य आनन्द मनीषी	संरक्षक
श्री निरंजन सिंह	प्रधान
श्रीमती आशा अग्रवाल	उपप्रधान
श्रीमती स्नेहलता मेहता	उपप्रधान
श्री चन्द्र प्रकाश मौर्य	उपप्रधान
श्री रामचन्द्र आर्य	उपप्रधान
श्री राजीव बत्रा	मंत्री
श्री काशी प्रसाद शास्त्री	उपमंत्री
श्री विजय मित्र द्विवेदी	उपमंत्री
श्री बी.एन.सक्सेना	कोषाध्यक्ष
श्री रमाकान्त सिंह	सम्प्रेक्षक

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, प्रिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पों.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में